मुक्त चिंतन

News Letter

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा निर्गत अधिनियम संख्या 10, 1999 द्वारा स्थापित

॥ सरस्वती नः सुभगा मयस्करत् ॥

हम पहुँचे वहाँ, पहुँचा न कोई जहाँ

06 मार्च 2018

उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय के नवनियुक्त कुलपति माननीय प्रोफेसर कामेश्वर नाथ सिंह ने राजभवन, लखनऊ में विश्वविद्यालय के कुलाधिपति एवं उत्तर प्रदेश के राज्यपाल माननीय श्रीयुत राम नाईक जी से शिष्टाचार भेंट की।

मुक्त चिंतन

News Letter

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा निर्गत अधिनियम संख्या 10, 1999 द्वारा स्थापित

॥ सरस्वती नः सुभगा मयस्करत् ॥

हम पहुँचे वहाँ, पहुँचा न कोई जहाँ

07 मार्च 2018

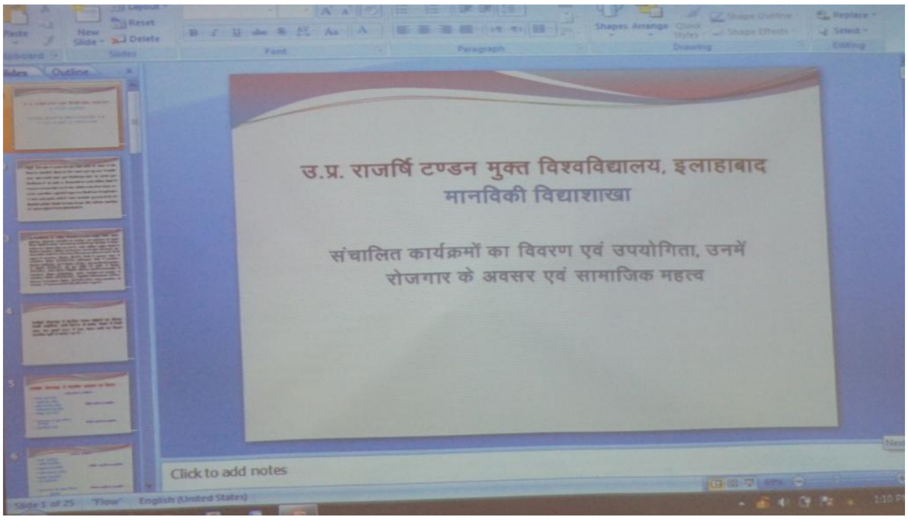

मानविकी विद्याशाखा एवं समाज विज्ञान विद्याशाखा ने किया शैक्षिक कार्यक्रमों का प्रजेन्टेशन

दिनांक 07 मार्च, 2018 को मानविकी विद्याशाखा एवं समाज विज्ञान विद्याशाखा द्वारा कुलपति प्रो0 कामेश्वर नाथ सिंह के समक्ष विभिन्न शैक्षणिक कार्यक्रमों की उपयोगिता का प्रस्तुतीकरण किया गया। मानविकी विद्यााखा के निदेशक डॉ0 आर0पी0एस0 यादव ने मानविकी के सभी सदस्यों का परिचय कराया। मानविकी विद्याशाखा के उपनिदेशक/एसो0 प्रोफेसर डॉ0 विनोद कुमार गुप्ता ने विभाग में संचालित कार्यक्रमों का विवरण प्रस्तुत किया।

इसी क्रम में समाज विज्ञान विद्याशाखा के प्रभारी प्रो0 सुधांशु त्रिपाठी ने समाज विज्ञान विद्याशाखा के सभी सदस्यों का परिचय कराया और विभाग द्वारा संचालित लोकप्रिय कार्यक्रमों के बारे में जानकारी दी।

कुलपति प्रो0 सिंह ने सभी संकाय सदस्यों से लोकप्रिय कार्यक्रयों से अधिक से अधिक छात्र–छात्राओं को लाभान्वित करने के लिये प्रीकाउन्सिलिंग कैम्प एवं जागरूकता कार्यक्रम संचालित करने के लिये प्रेरित किया।

मुक्त चिंतन News Letter

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा निर्गत अधिनियम संख्या 10, 1999 द्वारा स्थापित

॥ सरस्वती नः सुभगा मयस्करत् ॥

हम पहुँचे वहाँ, पहुँचा न कोई जहाँ

08 मार्च 2018

विश्वविद्यालय के कमेटी कक्ष में दिनांक 08 मार्च, 2018 को स्वास्थ्य विज्ञान विद्याशाखा, शिक्षा विद्याशाखा तथा कृषि विज्ञान विद्याशाखा के अन्तर्गत संचालित कार्यक्रमों का विवरण, उनकी उपयोगिता एवं रोजगार के अवसर, समाज में उनके प्रमाण एवं छात्रों की संख्या में बढ़ोत्तरी के सम्बन्ध में कुलपति प्रो0 कामेश्वर नाथ सिंह के समक्ष पावर प्वाइंट प्रजेन्टेशन किया गया। स्वास्थ्य विज्ञान विद्याशाखा के निदेशक प्रो0 गिरिजा शंकर शुक्ल ने अपनी विद्याशाखा के संकाय सदस्यों का परिचय कराया। तत्पश्चात स्वास्थ्य विज्ञान विद्याशाखा की असि. प्रोफेसर डॉ0 मीरा पाल ने पावर प्वाइंट के माध्यम से विभिन्न कार्यक्रमों की उपयोगिता के बारे में बताया। शिक्षा विद्याशाखा की तरफ से प्रो0 पी0के0 पाण्डेय ने विभाग की गतिविधियों के बारे में जानकारी दी।

इसी प्रकार कृषि विज्ञान विद्याशाखा के निदेशक डॉ0 पी0पी0 दुबे ने कृषि से सम्बन्धित कार्यक्रमों के बारे में कुलपति प्रो0 सिंह को जानकारी दी।

कुलपति प्रो0 सिंह ने सभी निदेशकों एवं संकाय सदस्यों से कहा कि वे कार्यक्रमों की लचीलता का ध्यान रखें तथा उपयोगी कार्यक्रमों से अधिक से अधिक लोगों को लाभान्वित किया जाय।

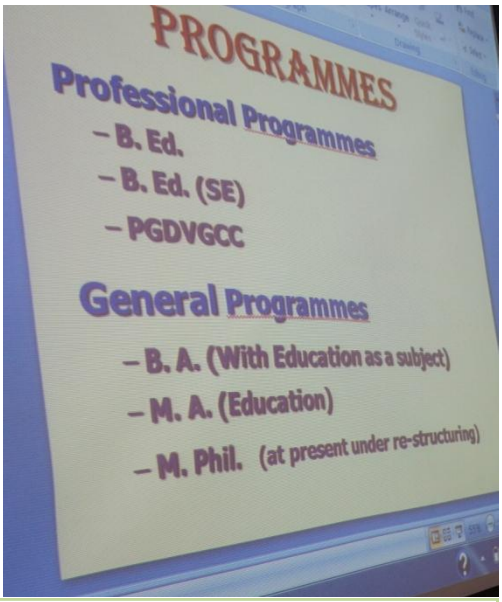

पावर प्वाइंट प्रजेन्टेशन देखते हुए माननीय कुलपति प्रो0 कामेश्वर नाथ सिंह एवं निदेशक स्वास्थ्य विज्ञान विद्याशाखा, प्रो0 गिरिजा शंकर शुक्ल

पावर प्वाइंट प्रजेन्टेशन देती हुई स्वास्थ्य विज्ञान विद्याशाखा की असि. प्रोफेसर डॉ0 मीरा पाल

पावर प्वाइंट प्रजेन्टेशन देते हुए शिक्षा विद्याशाखा के प्रभारी निदेशक प्रो0 पी0के0 पाण्डेय

पावर प्वाइंट प्रजेन्टेशन देते हुए कृषि विज्ञान विद्याशाखा के निदेशक डॉ0 पी0पी0 दुबे

माननीय कुलपति प्रो0 कामेश्वर नाथ सिंह जी के साथ शैक्षणिक विचार विमर्श करते हुए डॉ0 डी0के सिंह, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ एवं डॉ0 ए0एन0 सिंह, इलाहाबाद राज्य विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।

लखनऊ, 07.03.2018

अमर उजाला career

मुक्त विवि होम्योपैथिक कॉलेज के साथ चलाएगा मेडिकल पाठ्यक्रम

सचिन त्रिपाठी

लखनऊ। उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय राजधानी के राजकीय होम्योपैथिक कॉलेज के साथ मिलकर मेडिकल के डिप्लोमा और सर्टिफिकेट कोर्स संचालित करेगा। इसके लिए गोमतीनगर स्थित राजकीय कॉलेज में अध्ययन केंद्र खोला जाएगा। इसके माध्यम से अन्य विद्यार्थी भी मेडिकल के डिप्लोमा व सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम की पढ़ाई कर सकेंगे।

मंगलवार को यह जानकारी मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. केएन सिंह ने विकासनगर स्थित क्षेत्रीय अध्ययन केंद्र के निरीक्षण के दौरान दी।

उन्होंने बताया कि इस समय मुक्त विवि से मेडिकल पर आधारित सात डिप्लोमा और सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम संचालित किए जाते हैं। इनमें नेचुरोपैथी, डायटीशियन, योग पर तीन डिप्लोमा व सर्टिफिकेट और पब्लिक हेल्थ पर आधारित पाठ्यक्रम शामिल हैं, जिनमें प्रैक्टिकल भी होते हैं। इसलिए इनका संचालन मेडिकल कॉलेज में ही हो सकता है। इस संबंध में होम्योपैथिक कॉलेज से बात की गई है। जल्द ही प्रेजेंटेशन देकर पाठ्यक्रम का संचालन शुरू किया जाएगा।

गोमतीनगर स्थित राजकीय कॉलेज में खुलेगा अध्ययन केंद्र

कुलपति प्रो. केएन सिंह व लखनऊ क्षेत्रीय केंद्र की समन्वयक डॉ. नीरांजलि सिन्हा।

कम होगा लखनऊ के क्षेत्रीय अध्ययन केंद्र पर दबाव

कुलपति ने बताया कि इस समय क्षेत्रीय अध्ययन केंद्र लखनऊ के माध्यम से 12 जिलों में अध्ययन केंद्रों का संचालन हो रहा है। इस वजह से इस अध्ययन केंद्र पर दबाव बहुत ज्यादा है। इसे कम करने के लिए जल्द ही फैजाबाद में एक अतिरिक्त क्षेत्रीय अध्ययन केंद्र की स्थापना होगी। निरीक्षण के दौरान उन्होंने क्षेत्रीय अध्ययन केंद्र पर एल्युमिनाई मीट के आयोजन के लिए समन्वयक डॉ. नीरांजलि सिन्हा को निर्देश भी दिया।

डिग्री के साथ कर सकते हैं डिप्लोमा व सर्टिफिकेट

विवि के रजिस्ट्रार प्रो. जीएस शुक्ला ने बताया कि यूजीसी की गाइडलाइन के अनुसार इस समय दोहरी डिग्री दी जा सकती है। एक डिग्री के साथ डिप्लोमा या फिर सर्टिफिकेट कोर्स किया जा सकता है। होम्योपैथिक कॉलेज में अध्ययन केंद्र खुलने पर इसका सबसे ज्यादा फायदा यहां के ही विद्यार्थियों को होगा। मुक्त विवि के पाठ्यक्रमों की फीस बेहद कम है। इसलिए छात्र अपनी मुख्य डिग्री के साथ ही ये डिप्लोमा व सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम कर सकते हैं।

॥ सरस्वती नः सुभगा मयस्करत् ॥

मुक्त चिंतन

News Letter

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा निर्गत अधिनियम संख्या 10, 1999 द्वारा स्थापित

A Quarterly News Bulletin of U.P. Rajarshi Tandon Open University, Allahabad

हम पहुँचे वहाँ, पहुँचा न कोई जहाँ

09 मार्च 2018

माननीय कुलपति प्रो0 कामेश्वर नाथ सिंह जी को पुष्पगुच्छ प्रदान कर उनका स्वागत करते हुए डॉ0 शैलेन्द्र कुमार मिश्र, प्राचार्य, शुकदेव प्रसाद त्रिपाठी महाविद्यालय, कुशीनगर।

माननीय कुलपति प्रो0 कामेश्वर नाथ सिंह जी को पुष्पगुच्छ प्रदान कर उनका स्वागत करते हुए शुकदेव प्रसाद त्रिपाठी महाविद्यालय, कुशीनगर के समन्वयक।

माननीय कुलपति प्रो0 कामेश्वर नाथ सिंह जी को पुष्पगुच्छ प्रदान कर उनका स्वागत करते हुए कृष्ण सुदामा पी.जी. कालेज के प्रबन्धक श्री विजय यादव,

वर्ष 5 अंक 186
Pages 12
Allahabad, Friday
9 March 2018
ALLAHABAD EDITION
Within Allahabad City- ₹ 1.50/-
Outside Allahabad City.- ₹ 3/-

दैनिक जागरण

www.inextlive.com
Published from ALLAHABAD • Agra • Bareilly • Dehradun • Gorakhpur • Jamshedpur • Kanpur • Lucknow • Meerut • Patna • Ranchi • Varanasi

मानव संसाधन के विकास में शिक्षकों की भूमिका अहम

allahabad@inext.co.in

ALLAHABAD (8 March): इलाहाबाद विश्वविद्यालय के यूजीसी-एचआरडी की ओर से संचालित तीसरे विशिष्ट शीतकालीन पुनश्चर्या कार्यक्रम में उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन ओपन यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रो. कामेश्वर नाथ सिंह ने कहा कि मानव संसाधन का विकास शिक्षकों के सार्थक योगदान के बिना सम्भव नहीं है. उन्होंने कहा कि मानव संसाधन को स्वरूप देने में शिक्षकों का गुरुतर दायित्व है. शिक्षक स्वयं को सक्षम बनाकर राष्ट्र

निर्माण में अपनी व्यापक भूमिका सृजित कर सकते हैं. प्रो. केएन सिंह ने कहा कि संसाधन कहीं अन्यत्र वाह्य जगत में न होकर मनुष्य के मस्तिष्क और ज्ञान में समाहित है. मस्तिष्क का विकास करने में शिक्षकों की भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण है. निदेशक यूजीसी-एचआरडी केन्द्र इविवि प्रो. आरके सिंह ने कहा कि शिक्षकों को अपनी क्षमताओं को विकसित करना होगा. उन्हीं के प्रयास से ही एक विकसित भारत का सपना साकार होगा. भारत पूरे विश्व में अपने कौशल के लिये जाना जाता है. भारत में शिक्षा के विकास से परिवर्तन सम्भव है. प्रो. एआर सिद्दीकी ने कहा कि भारत में मनुष्य सामाजिक पूंजी के रूप में है.

शुक्रवार ९ मार्च, २०१८ सौर २५ फाल्गुन सं. २०७४ वि.

आज

शिक्षक सक्षम बनकर राष्ट्रनिर्माणमें अपनी भूमिका सृजित करें–प्रो. सिंह

'मानव संसाधन का विकास शिक्षकों के सार्थक योगदान के बिना सम्भव नहीं है। भारत में विकास की सारी संभावनायें है। अज्ञानता एवं निरक्षरता को दूर करने की आवश्यकता है। मानव संसाधन को स्वरूप देने में शिक्षकों का गुरुतर दायित्व है। शिक्षक स्वयं को सक्षम बनकर राष्ट्र निर्माण में अपनी व्यापक भूमिका सृजित कर सकते हैं। उक्त विचार कामेश्वर नाथ सिंह इलाहाबाद विश्वविद्यालय के यूजीसी-एचआरडी द्वारा संचालित तीसरे विशिष्ट शीतकालीन पुनश्चर्या में व्यक्त किया। उन्होंने आगे कहा कि संसाधन कहीं अन्यत्र वाह्य जगत में न होकर मनुष्य के मस्तिष्क और ज्ञान में समाहित है। मस्तिष्क का विकास करने में शिक्षकों की भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण है। इस अवसर पर निदेशक यूजीसी-एचआरडी केन्द्र इलाहाबाद विश्वविद्यालय प्रो. आर.के सिंह ने कहा कि शिक्षकों को अपनी क्षमताओं को विकसित करना होगा, उन्हीं के प्रयासों से ही एक विकसित भारत का सपना साकार होगा। भारत पूरे विश्व में अपने कौशल के लिये जाना जाता है। भारत में शिक्षा के विकास से परिवर्तन सम्भव है। कोर्स समन्वयक प्रो. ए.आर सिद्दीकी, भूगोल विभाग ने कहा कि भारत में मनुष्य सामाजिक पूंजी के रूप में है। मनुष्य अपने ज्ञान और श्रम से विकास की सारी संभावनाओं को प्राप्त कर सकता है। अन्त में डा.अश्वजीत चौधरी ने कुलपति राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रो. कामेश्वर नाथ सिंह तथा निदेशक यूजीसी-एचआरडी केन्द्र इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रो. आर.के सिंह के साथ-साथ अन्य सभी को आभार और धन्यवाद व्यक्त किया।

॥ सरस्वती नः सुभगा मयस्करत् ॥

मुक्त चिंतन

News Letter

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा निर्गत अधिनियम संख्या 10, 1999 द्वारा स्थापित

A Quarterly News Bulletin of U.P. Rajarshi Tandon Open University, Allahabad

हम पहुँचे वहाँ, पहुँचा न कोई जहाँ

11 मार्च 2018

रमेश चन्द्र राव नवतप्ती महाविद्यालय, रामपुरगढ़, देवरिया में छात्रों से सीधा संवाद एवं स्वागत समारोह में माननीय कुलपति प्रो0 कामेश्वर नाथ सिंह जी।

मुक्त चिंतन News Letter

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा निर्गत अधिनियम संख्या 10, 1999 द्वारा स्थापित

A Quarterly News Bulletin of U.P. Rajarshi Tandon Open University, Allahabad

॥ सरस्वती नः सुभगा मयस्करत् ॥

हम पहुँचे वहाँ, पहुँचा न कोई जहाँ

13 मार्च 2018

मान्यता बोर्ड की 22वीं बैठक

दिनांक 13 मार्च, 2018

उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय की माान्यता बोर्ड की 22वीं बैठक दिनांक 13 मार्च, 2018 को अपराहन 03:00 बजे कमेटी कक्ष में आहूत की गई। बैठक की अध्यक्षता प्रो0 कामेश्वर नाथ सिंह, कुलपति, उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद ने की। बैठक में कई महत्वपूर्ण निर्णय लिया गया।

बैठक में प्रो0 जे.एन. मिश्र, वाणिज्य विभाग, पूर्व वित अधिकारी एवं कुलसचिव, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, डॉ0 ओमजी गुप्ता, निदेशक, प्रबन्धन अध्ययन वि़द्याशाखा, उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, डॉ0 पी0पी0 दुबे, निदेशक, कृषि विज्ञान विद्याशाखा, उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, डॉ0 आर0पी0एस0 यादव, निदेशक, मानविकी विद्याशाख, उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, डॉ0 आशुतोष गुप्ता निदेशक, विज्ञान विद्याशाखा, उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, डॉ0 टी0एन0 दुबे, पुस्तकालयाध्क्ष, उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, डॉ0 इति तिवारी, एसोसिएट प्रोफेसर, समाज विज्ञान विद्याशाखा, उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, डॉ0 सन्तोषा कुमार, एसोसिएट प्रोफेसर, समाज विज्ञान विद्याशाखा, उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, डॉ0 जी0 के0 द्विवेदी, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, शिक्षा विद्याशाखा, उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, श्री एस0पी0 सिंह, वित्त अधिकारी, उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद (विशेष आमंत्रित) एवं डॉ0 गिरिजा शंकर शुक्ल निदेशक, स्वास्थ्य विज्ञान विद्याशाखा/कुलसचिव, उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद उपस्थित रहे।

मान्यता बोर्ड की बैठक की अध्यक्षता करते हुए मा0 कुलपति जी एवं उपस्थित मा0सदस्यगण।

मुक्त चिंतन News Letter

॥ सरस्वती नः सुभगा मयस्करत् ॥

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा निर्गत अधिनियम संख्या 10, 1999 द्वारा स्थापित

A Quarterly News Bulletin of U.P. Rajarshi Tandon Open University, Allahabad

हम पहुँचे वहाँ, पहुँचा न कोई जहाँ

14 मार्च 2018

दिनांक 14 मार्च, 2018 को उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय में भूगोल पाठ्यक्रम विषयक कार्यशाला का आयोजन हुआ जिसमें विश्वविद्यालय में भूगोल विषय पढ़ाये जाने का निर्णय लिया गया।

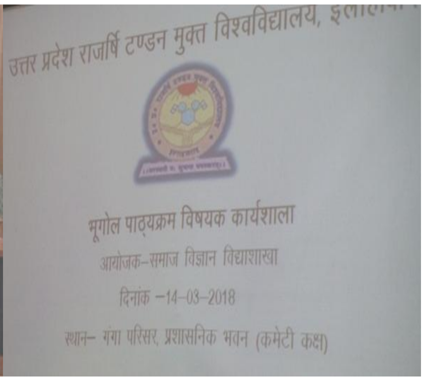

भूगोल विषयक पाठ्यक्रम की कार्यशाला की अध्यक्षता करते हुए माननीय कुलपति प्रो0 कामेश्वर नाथ सिंह जी।

DAILY NEWS ACTIVIST
ALLAHABAD
15-03-2018

भूगोल का अध्ययन हर नागरिक से अपेक्षित: प्रो. सिंह

डेली न्यूज़ नेटवर्क

- मुविवि में भूगोल पाठ्यक्रम विषयक कार्यशाला आयोजित

इलाहाबाद। देश के इतिहास एवं भूगोल का अध्ययन देश के हर नागरिक से अपेक्षित है। इस दृष्टि से भूगोल जैसे विषय को दूरस्थ शिक्षा से अलग रखना न्यायसंगत नहीं है। इसे ध्यान में रखते हुये उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय (मुविवि) ने भूगोल विषय को स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर लागू करने का निर्णय लिया गया। उक्त जानकारी उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. कामेश्वर नाथ सिंह ने कहीं। वो भूगोल विषयक पाठ्यक्रम की संरचना को ध्यान में रखते हुए आयोजित कार्यशाला में बोल रहे थे। प्रो. सिंह ने बताया भूगोल की शिक्षा से वंचित वर्ग तक राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय की अभिगम्यता विश्वविद्यालय की आस्था एवं निष्ठा का विषय है। उन्होंने कहा कि भूगोल विषय में ही समय व स्थान का बोध कराया जाता है। जिसको समय और स्थान का बोध हो गया वह स्थितप्रज्ञ है।

भूगोल के पाठ्यक्रम को लेकर आयोजित इस एक दिवसीय कार्यशाला में विशेषज्ञों ने इस बात पर जोर दिया कि स्नातक स्तर पर भूगोल विषय में सामान्य जानकारी एवं स्नातकोत्तर स्तर पर विशेषज्ञता पर बल देना चाहिए। इस कार्यशाला में दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के भूगोल विभाग के अध्यक्ष प्रो. एसके सिंह, डॉ. एनके राणा, नेशनल एसोशिएशन आफ ज्याग्राफर्स, इण्डिया (नागी) के पूर्व अध्यक्ष प्रो. जगदीश सिंह, सिद्धार्थनगर विश्वविद्यालय से डॉ. एसएन सिंह, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से प्रो. अरूण सिंह, इलाहाबाद विश्वविद्यालय से भूगोल विभाग के अध्यक्ष प्रो. एस.एस. ओझा, प्रो. बी.एन. सिंह, प्रो. मनोरमा सिन्हा, प्रो. आलोक दुबे, प्रो. ए.आर. सिद्दीकी, डॉ. कैलाश सिंह, डॉ. अरूण सिंह एवं आगरा विश्वविद्यालय से राजकुमार ने भाग लिया। अतिथियों का स्वागत समाज विज्ञान विद्याशाखा के प्रभारी प्रो. सुधांशु त्रिपाठी ने किया।

DAINIK JAGRAN
ALLAHABAD
15-03-2018

मुक्त विवि में भी अब पढ़ाया जाएगा भूगोल

जासं, इलाहाबाद : देश के इतिहास व भूगोल का अध्ययन हर नागरिक को करना चाहिए। इस दृष्टि से भूगोल जैसे विषय को दूरस्थ शिक्षा से अलग रखना न्यायसंगत नहीं है। इसे ध्यान में रखते हुए उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय ने भूगोल विषय को स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर लागू करने का निर्णय लिया गया। अभी तक विश्वविद्यालय में यह विषय नहीं पढ़ाया जाता था।

राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. कामेश्वर नाथ सिंह ने बताया कि भूगोल की शिक्षा से वंचित वर्ग तक पहुंचाना विश्वविद्यालय का ध्येय है। भूगोल विषय में ही समय व स्थान का बोध कराया जाता है। जिसको समय और स्थान का बोध हो गया वह स्थितप्रज्ञ है।भूगोल के पाठ्यक्रम को लेकर आयोजित इस एक दिवसीय कार्यशाला में विशेषज्ञों ने इस बात पर जोर दिया कि स्नातक स्तर पर भूगोल विषय में सामान्य जानकारी एवं स्नातकोत्तर स्तर पर विशेषज्ञता पर बल देना चाहिए। इस कार्यशाला में दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के भूगोल विभाग के अध्यक्ष प्रो. एसके सिंह, डॉ. एनके राणा, नेशनल एसोशिएशन आफ ज्याग्राफर्स इंडिया (नागी) के पूर्व अध्यक्ष प्रो. जगदीश सिंह, सिद्धार्थनगर विश्वविद्यालय से डॉ. एसएन सिंह, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से प्रो. अरुण सिंह, इलाहाबाद विश्वविद्यालय से भूगोल विभाग के अध्यक्ष प्रो. एसएस ओझा, प्रो. बीएन सिंह, प्रो. मनोरमा सिन्हा, प्रो. आलोक दुबे, प्रो. एआर सिद्दीकी, डॉ. कैलाश सिंह, डॉ. अरुण सिंह एवं आगरा विश्वविद्यालय से राजकुमार ने भाग लिया। अतिथियों का स्वागत समाज विज्ञान विद्याशाखा के प्रभारी प्रो. सुधांशु त्रिपाठी ने किया। इस अवसर पर छात्र व शिक्षक मौजूद रहे।

AMAR UJALA
ALLAHABAD
15-03-2018

भूगोल का अध्ययन हर नागरिक से अपेक्षित: प्रो. सिंह

इलाहाबाद। भूगोल जैसे विषय को दूरस्थ शिक्षा से अलग रखना न्यायसंगत नहीं है। इसे ध्यान में रखते हुए ही भूगोल विषय को स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर लागू करने का निर्णय लिया गया। यह बातें उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. कामेश्वर नाथ सिंह ने भूगोल पाठ्यक्रम की संरचना पर आयोजित कार्यशाला में कहीं। प्रो. सिंह ने कहा कि भूगोल विषय में ही समय और स्थान का बोध कराया जाता है।

मुविवि में भूगोल पाठ्यक्रम विषयक कार्यशाला

कार्यशाला में विशेषज्ञों ने कहा कि स्नातक स्तर पर भूगोल विषय में सामान्य जानकारी एवं स्नातकोत्तर स्तर पर विशेषज्ञता पर बल देना चाहिए। कार्यशाला में दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के भूगोल विभाग के अध्यक्ष प्रो. एसके सिंह, डॉ. एनके. राणा, नेशनल एसोसिएशन ऑफ ज्याग्राफर्स, इंडिया (नागी) के पूर्व अध्यक्ष प्रो. जगदीश सिंह, सिद्धार्थनगर विश्वविद्यालय से डॉ. एसएन सिंह, काशी हिंदू विश्वविद्यालय से प्रो. अरूण सिंह, इविवि से भूगोल विभाग के अध्यक्ष प्रो. एसएस ओझा, प्रो. बीएन सिंह, प्रो. मनोरमा सिंहा, प्रो. आलोक दूबे, प्रो. एआर. सिद्दीकी, डॉ. कैलाश सिंह, डॉ. अरुण सिंह एवं आगरा विश्वविद्यालय से राजकुमार ने प्रतिभाग किया। अतिथियों का स्वागत समाज विज्ञान विद्याशाखा के प्रभारी प्रो. सुधांशु त्रिपाठी ने किया।

|| सरस्वती नः सुभगा मयस्करत् ||

मुक्त चिंतन

News Letter

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा निर्गत अधिनियम संख्या 10, 1999 द्वारा स्थापित

A Quarterly News Bulletin of U.P. Rajarshi Tandon Open University, Allahabad

हम पहुँचे वहाँ, पहुँचा न कोई जहाँ

15 मार्च 2018

जी.एस.टी.पर कार्यशाला का आयोजन

दिनाँक 15–03–2016 को प्रबन्धन अध्ययन विद्या शाखा द्वारा जी.एस.टी.पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें जी.एस.टी. पर प्रमाण पत्र एवं डिप्लोमा कार्यक्रम के पाठ्यक्रम को प्रस्तावित किया गया।

प्रबन्धन अध्ययन विद्याशाखा के निदेशक डॉ0 ओमजी गुप्ता के साथ आमंत्रित विशेषज्ञगण एवं संकाय सदस्य

JANSANDESH TIMES

ALLAHABAD

17-03-2018

मुक्त विवि में जीएसटी पर प्रमाणपत्र एवं डिप्लोमा शीघ्र

कार्यशाला में विचार व्यक्त करते

इलाहाबाद। उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद ने जीएसटी को लेकर लोगों को जागरूक करने एवं रोजगार परक कार्यक्रम प्रारम्भ करने का निर्णय लिया है। जिसमें प्रवेश हेतु न्यूनतम योग्यता इण्टरमीडिएट रखी गयी है।

उक्त विचार विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. कामेश्वर नाथ सिंह ने मुक्त विश्वविद्यालय में आयोजित कार्यशाला में व्यक्त किया। इस अवसर पर अतिरिक्त कर मामलों के विशेषज्ञ डा. पवन जायसवाल ने जीएसटी के व्यावहारिक पहलुओं तथा उसको रोजगार परक बनाने के लिए पाठ्यक्रम निर्माण में अपने अनुभवों को साझा किया। विश्वविद्यालय में जीएसटी पर प्रमाण पत्र एवं डिप्लोमा कार्यक्रम के पाठ्यक्रम निर्माण हेतु आयोजित कार्यशाला में गोरखपुर विश्वविद्यालय के वाणिज्य विभाग के प्रो. आर.पी सिंह, प्रो. संजीत कुमार गुप्ता तथा इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्रो. आर.एस सिंह ने प्रतिभाग किया। इस अवसर पर प्रबंधन विद्याशाखा के निदेशक डा.ओमजी गुप्ता ने विषय विशेषज्ञों का स्वागत एवं कार्यशाला की रूपरेखा डा.ज्ञान प्रकाश यादव ने प्रस्तुत किया तथा डा.देवेश रंजन त्रिपाठी एवं डा.गौरव संकल्प ने पाठ्यक्रम निर्माण में सहयोग प्रदान किया।

G S T

DAILY NEWS ACTIVIST

ALLAHABAD

17-03-2018

मुविवि: अब जीएसटी की भी होगी पढ़ाई

डेली न्यूज नेटवर्क

इलाहाबाद। माल एवं सेवा कर को लेकर जब पूरे देश के कारोबारी एवं अधिवक्ता भ्रमित है उस वक्त उप्र राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद जीएसटी को लेकर लोगों को जागरूक करने एवं रोजगार परक कार्यक्रम प्रारम्भ करने का निर्णय लिया है। यह विचार विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. कामेश्वर नाथ सिंह ने विश्वविद्यालय में आयोजित कार्यशाला में व्यक्त किये। इस अवसर पर अतिरिक्त कर मामलों के विशेषज्ञ डॉ. पवन जायसवाल ने भी प्रतिभाग किया एवं जीएसटी के व्यावहारिक पहलुओं तथा उसको रोजगार परक बनाने के लिए पाठ्यक्रम निर्माण में अपने अनुभवों को साझा किया। इस कार्यक्रम में प्रवेश हेतु न्यूनतम योग्यता इण्टरमीडिएट रखी गयी है।

विश्वविद्यालय में जीएसटी पर प्रमाण-पत्र एवं डिप्लोमा कार्यक्रम के पाठ्यक्रम निर्माण हेतु आयोजित कार्यशाला में गोरखपुर विश्वविद्यालय के वाणिज्य विभाग के प्रो. आरपी सिंह एवं प्रो. संजीत कुमार गुप्ता तथा इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्रो. आरएस सिंह ने प्रतिभाग किया इस अवसर पर प्रबंधन विद्याशाखा के निदेशक डॉ. ओम जी गुप्ता ने विषय विशेषज्ञों का स्वागत किया। कार्यशाला की रूपरेखा डॉ. ज्ञान प्रकाश यादव ने प्रस्तुत डॉ. देवेश रंजन त्रिपाठी एवं डॉ. गौरव संकल्प ने पाठ्यक्रम निर्माण में सहयोग प्रदान किया। यह जानकारी मीडिया प्रभारी डॉ. प्रभात चन्द्र मिश्र ने दी।

मुक्त चिंतन

News Letter

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा निर्गत अधिनियम संख्या 10, 1999 द्वारा स्थापित

A Quarterly News Bulletin of U.P. Rajarshi Tandon Open University, Allahabad

॥ सरस्वती नः सुभगा मयस्करत् ॥

हम पहुँचे वहाँ, पहुँचा न कोई जहाँ

16 मार्च 2018

AMAR UJALA
ALLAHABAD
17-03-2018

मतभेद होना चाहिए लेकिन मनभेद नहीं: प्रो. केएन सिंह

इलाहाबाद। गोविंद बल्लभ पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान में सुशासन में अहिंसात्मक संवाद की भूमिका विषयक राष्ट्रीय कार्यशाला शुक्रवार को सुशासन के लिए व्यक्ति निर्माण की संस्थाओं को जीवंत करने के संकल्प के साथ पूरी हो गई। राष्ट्रीय कार्यशाला के समापन सत्र में उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विवि के कुलपति प्रो. केएन सिंह ने कहा कि मतभेद होना चाहिए, मनभेद नहीं। उन्होंने कहा कि गंगा का मैदान श्रेष्ठतम उर्वरा शक्ति वाला मैदान है, यह केवल उत्पादकता के लिहाज से नहीं बल्कि व्यक्ति निर्माण की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। बीजेपी के राष्ट्रीय प्रवक्ता प्रेम कुमार शुक्ल ने गांधी दर्शन की उपयोगिता के लिए सुशासन को अनिवार्य बताया।

जी.बी. पन्त सामाजिक विज्ञान संस्थान, झूंसी में आयोजितसुशासन में अंहिसात्मक संवाद की भूमिका विषयक राष्ट्रीय कार्यशाला के समापन सत्र के मुख्य अतिथि मा0 कुलपति प्रो0 कामेश्वर नाथ सिंह एवं संस्थान के निदेशक प्रो0 बद्री नारायण के साथ प्रतिभागीगण।

मुक्त चिंतन News Letter

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा निर्गत अधिनियम संख्या 10, 1999 द्वारा स्थापित

A Quarterly News Bulletin of U.P. Rajarshi Tandon Open University, Allahabad

॥ सरस्वती नः सुभगा मयस्करत् ॥

हम पहुँचे वहाँ, पहुँचा न कोई जहाँ

17 मार्च 2018

मुविवि में ''संस्कृत–वाड्.मय में वैज्ञानिक संचेतना'' राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित

दिनांक 17 मार्च, 2018 को उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय के मानविकी विद्याशाखा के तत्वावधान में सरस्वती परिसर के लोकमान्य तिलक शास्त्रर्थ सभागार में ''संस्कृत–वाड्.मय में वैज्ञानिक संचेतना' विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गयी। एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के मुख्य अतिथि अंतरिक्ष वैज्ञानिक एवं प्रधानमंत्री के पूर्व वैज्ञानिक सलाहकार प्रो0 ओम प्रकाश पाण्डेय जी रहे। विशिष्ट अतिथि इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्रोफेसर हरिदत्त शर्मा जी रहे एवं अध्यक्षता माननीय कुलपति प्रो0 कामेश्वर नाथ सिंह जी ने की।

उद्घाटन सत्र का संचालन आयोजन सचिव डॉ0 विनोद कुमार गुप्त ने किया। अतिथियों का स्वागत मानविकी विद्याशाखा के निदेशक डॉ0 आर0पी0एस0 यादव ने एवं धन्यवाद ज्ञापन कुलसचिव प्रो0 जी0एस0 शुक्ल ने किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि प्रो0 पाण्डेय ने डॉ0 अनिता सिंह गुप्ता कृत पुस्तक विश्वभारती का विमोचन किया।

विभिन्न तकनीकी सत्रों में प्रो0 ओ0पी0 पाण्डेय, प्रो0 मृदुला त्रिपाठी, प्रो0 ललित त्रिपाठी, डॉ0 राम विनय सिंह, डॉ0 अरविन्द मिश्र, डॉ0 राजेन्द्र त्रिपाठी 'रसराज' आदि ने शोध परक व्याख्यान दिये। सेमिनार में देशभर से आए प्रतिभागियों ने शोध पत्र प्रस्तुत किए। समापन सत्र की मुख्य अतिथि इलाहाबाद विश्वविद्यालय की कला संकाय की अधिष्ठाता प्रो0 मृदुला त्रिपाठी रहीं तथा अध्यक्षता कुलपति प्रो0 के0एन0 सिंह ने की। सेमिनार की रिपोर्ट आयोजन सचिव डॉ0 विनोद कुमार गुप्ता ने प्रस्तुत की। संचालन डॉ0 स्मिता अग्रवाल ने तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ0 आर0पी0एस0 यादव ने किया।

डॉ0 अनिता सिंह गुप्ता कृत पुस्तक विश्वभारती का विमोचन करते हुए माननीय अतिथि।

उद्घाटन सत्र का संचालन करते हुए आयोजन सचिव डॉ0 विनोद कुमार गुप्त

सेमिनार के बारे में जानकारी देते हुए मानविकी विद्याशाखा के निदशक डॉ0 आर0पी0एस0 यादव।

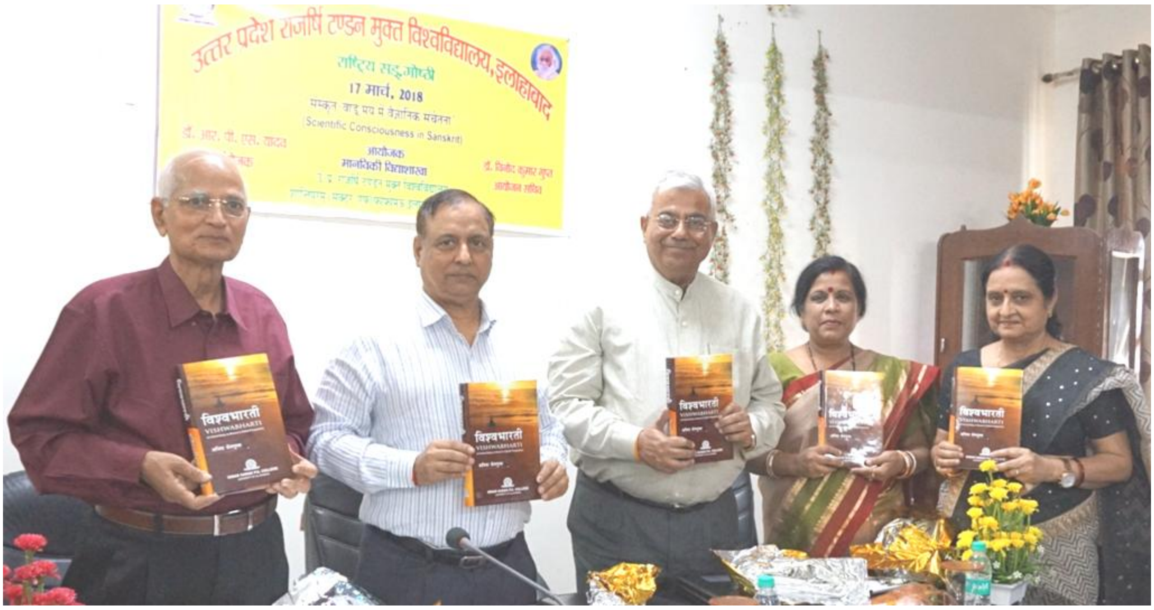

डॉ0 अनिता सिंह गुप्ता कृत पुस्तक विश्वभारती का विमोचन करते हुए माननीय अतिथि।

माननीय अतिथियों को अंगवस्त्र एवं स्मृति चिन्ह प्रदान कर उनका स्वागत करते हुए मा0 कुलपति जी।

माननीय कुलपति जी को अंगवस्त्र एवं स्मृति चिन्ह प्रदान करते हुए माननीय अतिथिगण।

प्रोफेसर हरिदत्त शर्मा

विशिष्ट अतिथि इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्रोफेसर हरिदत्त शर्मा ने कहा कि संस्कृत संसार की सर्वोत्तम वैज्ञानिक भाषा है। इसलिए पूरे विश्व के भाषा वैज्ञानिकों ने संस्कृत के महत्व को स्वीकार किया है और संस्कृत वाङ्.मय का व्यापक अध्ययन करके भारतीय मनीषा के महत्वपूर्ण ज्ञान पर शोध कार्य किए हैं।

प्रो0 शर्मा ने कहा कि संस्कृत वाङ्.मय में गणित आयुर्वेद, ज्योर्तिविज्ञान, भूगोल, खगोल विज्ञान, प्राणि विज्ञान, वास्तुविज्ञान, वनस्पति विज्ञान, आभियांत्रिकी, दृष्टि विज्ञान, सैन्य विज्ञान तथा विमान विज्ञान आदि के ज्ञानों का व्यापक भंडार है। उन्होंने कहा कि भारत की मूल चिकित्सा पद्धति आयुर्विज्ञान के सभी महत्वपूर्ण ग्रन्थ मूलतः संस्कृत में ही है।

प्रो0 ओम प्रकाश पाण्डेय

इसे अपौरूषेय माना गया है। इसमें विश्व के समस्त प्राचीन ज्ञान–विज्ञान का अपार भण्डार समाहित है। उक्त विचार अंतरिक्ष वैज्ञानिक एवं प्रधानमंत्री के पूर्व वैज्ञानिक सलाहकार प्रो0 ओम प्रकाश पाण्डेय ने व्यक्त किये। प्रो0 पाण्डेय शनिवार को उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय के मानविकी विद्याशाखा के तत्वावधान में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी ''संस्कृत–वाङ्.मय में वैज्ञानिक संचेतना' के उद्घाटन सत्र में बतौर मुख्य अतिथि विचार व्यक्त कर रहे थे।

प्रो0 पाण्डेय ने प्राचीन वैदिक वाङ्.मय से अनेक वैज्ञानिक खगोलीय तथा भाषा सम्बन्धी उदाहरण देते हुये इस तथ्य को स्पष्ट किया कि संस्कृत कभी मृतभाषा नहीं हो सकती है, क्योंकि यह भाषा मात्र नहीं बल्कि प्राकृतिक ध्वनि है जो संसार के कण–कण में व्याप्त है। उन्होंने कहा कि संस्कृत भाषा के अनेक शब्द विश्व की सभी भाषाओं में समाहित हैं।

अंतरिक्ष वैज्ञानिक प्रो0 पाण्डेय ने कहा कि प्राचीन वाङ्.मय में निहित वैज्ञानिक ज्ञान द्वारा यह सिद्ध हो चुका है कि जहाँ भी गति है वहाँ किसी न किसी प्रकार की ध्वनियां अवश्य विद्यमान है चूंकि प्रकाश में भी गति है इसलिए सूर्य से आने वाले प्रकाश से ही विभिन्न स्वर एवं व्यंजन ध्वनियों की उत्पत्ति हुई है। प्रो0 पाण्डेय ने कहा कि अमेरिका इत्यादि विकसित देशों में पिछले 20 वर्षो से स्पीच थिरैपी के लिए संस्कृति ध्वनियों के उच्चारण का प्रयोग किया जा रहा है। इसी तरह गुरूत्वाकर्षण के सिद्धान्त के बारे में प्रो0 पाण्डेय ने कहा क न्यूटन से बहुत पहले ईसवी पूर्व 6000 में महर्षि कणाद ने इस सिद्धान्त का प्रतिपादन वैशेषिकी ग्रन्थ के माध्यम से किया।

प्रो0 कामेश्वर नाथ सिंह

अध्यक्षता करते हुये मुविवि के कुलपति प्रो0 कामेश्वर नाथ सिंह ने कहा कि भारत के प्राचीन संस्कृत वाड्.मय में विश्व के समस्त ज्ञान का अपार भण्डार है लेकिन प्राच्य अध्ययन में इस देश की प्राचीनता को भुलाने का प्रयास हर स्तर पर किया गया। इस देश की सभ्यता दुनिया की प्राचीनतम सभ्यताओं में से एक है। प्रो0 सिंह ने कहा कि संस्कृत भाषा के पौराणिक साहित्य में निहित भौगोलिक ज्ञान में महाद्वीपों की रचना उनका विस्तार, पृथ्वी की उत्पत्ति का अद्यतन सिद्धान्त (बिगबैंग थ्योरी) आदि सभी अत्यन्त व्यवस्थित और वैज्ञानिक ढंग से विवेचित है।

प्रो0 सिंह ने कहा कि संस्कृत में जो विविध विषयक ज्ञान है उसे खोजना और समयानुकुल बनाकर अत्यन्त सरल एवं सुबोध रूप में प्रस्तुत करना एक बड़ी चुनौती है। उन्होंने कहा कि रोजगार की नवीन संभावनाओं से जोड़कर संस्कृत के अध्ययन को समयानुकूल और उपयोगी बनाया जा सकता है।

समापन सत्र

समापन सत्र का संचालन करती हुई डॉ0 स्मिता अग्रवाल

प्रो0 मृदुला त्रिपाठी को अंगवस्त्र एवं स्मृति चिन्ह प्रदान कर उनका स्वागत करते हुए मा0 कुलपति जी।

सेमिनार के समापन सत्रमें अपने अपने विचार व्यक्त करती हुई प्रो0 मृदुला त्रिपाठी जी।

सेमिनार के समापन सत्रमें अपने अपने विचार व्यक्त करते हुए माननीय कुलपति प्रो0 कामेश्वर नाथ सिंह जी।

e-paper : www.dailynewsactivist.com इलाहाबाद, रविवार, 18 मार्च 2018, चैत्र मास शुक्ल पक्ष प्रतिपदा, संवत् 2075 विक्रमी

वर्ष-11, अंक-152, पृष्ठ-16, मूल्य- ₹ 2.00, नगर संस्करण

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

डेली न्यूज़ ऐक्टिविस्ट

RNI NO.: UPHIN/2007/42889 संस्करण : लखनऊ ■ इलाहाबाद

शब्द शब्द संघर्ष

website : www.dnahindi.com

संस्कृत में प्राचीन ज्ञान-विज्ञान का भंडार: प्रो. पाण्डेय

डेली न्यूज़ नेटवर्क

इलाहाबाद। संस्कृत देवभाषा है। इसे अपौरुषेय माना गया है। इसमें विश्व के समस्त प्राचीन ज्ञान-विज्ञान का अपार भण्डार समाहित है। उक्त विचार अंतरिक्ष वैज्ञानिक एवं प्रधानमंत्री के पूर्व वैज्ञानिक सलाहकार प्रो0 ओम प्रकाश पाण्डेय ने व्यक्त किये। प्रो. पाण्डेय शनिवार को उत्तर प्रदेश

• मुविवि में 'संस्कृत-वाड्.मय में वैज्ञानिक संचेतना' राष्ट्रीय संगोष्ठी

राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय (मुविवि) के मानविकी विद्याशाखा के तत्वावधान में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी 'संस्कृत-वाड्.मय में वैज्ञानिक संचेतना' के उद्घाटन सत्र में बतौर मुख्य अतिथि विचार व्यक्त कर रहे थे।

प्रो. पाण्डेय ने प्राचीन वैदिक वाड्.मय से अनेक वैज्ञानिक खगोलीय तथा भाषा सम्बन्धी उदाहरण देते हुये इस तथ्य को स्पष्ट किया कि संस्कृत कभी मृतभाषा नहीं हो सकती है, क्योंकि यह भाषा मात्र नहीं बल्कि प्राकृतिक ध्वनि है जो संसार के कण-कण में व्यास है। उन्होंने कहा कि संस्कृत भाषा के अनेक शब्द विश्व की सभी भाषाओं में समाहित हैं। अंतरिक्ष वैज्ञानिक प्रो. पाण्डेय ने कहा कि प्राचीन वाड्.मय में निहित वैज्ञानिक ज्ञान द्वारा यह सिद्ध हो चुका है कि जहाँ भी गति है वहां किसी न किसी प्रकार की ध्वनियां अवश्य विद्यमान है चूंकि प्रकाश में भी गति है इसलिए सूर्य से आने वाले प्रकाश से ही विभिन्न स्वर एवं व्यंजन ध्वनियों की उत्पत्ति हुई है।

प्रो. पाण्डेय ने कहा कि अमेरिका इत्यादि विकसित देशों में पिछले 20 वर्षों से स्पीच थैरेपी के लिए संस्कृति ध्वनियों के उच्चारण का प्रयोग किया जा रहा है। इसी तरह गुरूत्वाकर्षण के सिद्धान्त के बारे में प्रो. पाण्डेय ने कहा क न्यूटन से बहुत पहले ईसवी पूर्व 6000 में महर्षि कणाद ने इस सिद्धान्त का प्रतिपादन वैशेषिकी ग्रन्थ के माध्यम से किया।

अध्यक्षता करते हुये मुविवि के कुलपति प्रो. कामेश्वर नाथ सिंह ने कहा कि भारत के प्राचीन संस्कृत वाड्.मय में विश्व के समस्त

ज्ञान का अपार भण्डार है लेकिन प्राच्य अध्ययन में इस देश की प्राचीनता को भुलाने का प्रयास हर स्तर पर किया गया। इस देश की सभ्यता दुनिया की प्राचीनतम सभ्यताओं में से एक है। प्रो. सिंह ने कहा कि संस्कृत भाषा के पौराणिक साहित्य में निहित भौगोलिक ज्ञान में महाद्वीपों की रचना उनका विस्तार, पृथ्वी की उत्पत्ति का अद्यतन सिद्धान्त (बिगबैंग थ्योरी) आदि सभी अत्यन्त व्यवस्थित और वैज्ञानिक ढंग से विवेचित है।

प्रो. सिंह ने कहा कि संस्कृत में जो विविध विषयक ज्ञान है उसे खोजना और समयानुकुल बनाकर अत्यन्त सरल एवं सुबोध रूप में प्रस्तुत करना एक बड़ी चुनौती है। उन्होंने कहा कि रोजगार की नवीन संभावनाओं से जोड़कर संस्कृत के अध्ययन को समयानुकूल और उपयोगी बनाया जा सकता है। विशिष्ट अतिथि इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्रो. हरिदत्त शर्मा ने कहा कि संस्कृत संसार की सर्वोत्तम वैज्ञानिक भाषा है। इसलिए पूरे विश्व के भाषा वैज्ञानिकों ने संस्कृत के महत्व को स्वीकार किया है और संस्कृत वाड्.मय का व्यापक अध्ययन करके भारतीय मनीषा के महत्वपूर्ण ज्ञान पर शोध कार्य किए हैं।

प्रो. शर्मा ने कहा कि संस्कृत वाड्.मय में गणित आयुर्वेद, ज्योतिर्विज्ञान, भूगोल, खगोल विज्ञान, प्राणि विज्ञान, वास्तुविज्ञान, वनस्पति विज्ञान, अभियांत्रिकी, दृष्टि विज्ञान, सैन्य विज्ञान तथा विमान विज्ञान आदि के ज्ञानों का व्यापक भंडार है। उन्होंने कहा कि भारत की मूल चिकित्सा पद्धति आयुर्विज्ञान के सभी महत्वपूर्ण ग्रन्थ मूलतः संस्कृत में ही है।

उद्घाटन सत्र का संचालन आयोजन सचिव डॉ. विनोद कुमार गुप्त ने किया। अतिथियों का स्वागत मानविकी विद्याशाखा के निदेशक डॉ. आरपीएस यादव ने एवं धन्यवाद ज्ञापन कुलसचिव प्रो. जीएस शुक्ल ने किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि प्रो. पाण्डेय ने डॉ. अनिता सिंह गुप्ता कृत पुस्तक विश्वभारती का विमोचन किया। विभिन्न तकनीकी सत्रों में प्रो. ओपी पाण्डेय, प्रो. मृदुला त्रिपाठी, प्रो. ललित त्रिपाठी, डॉ. राम विनय सिंह, डॉ. अरविन्द मिश्र, डॉ. राजेन्द्र त्रिपाठी 'रसराज' आदि ने शोध परक व्याख्यान दिये। सेमिनार में देशभर से आए प्रतिभागियों ने शोध पत्र प्रस्तुत किए। सेमिनार की रिपोर्ट आयोजन सचिव डॉ. विनोद कुमार गुप्ता ने प्रस्तुत की। संचालन डॉ. स्मिता अग्रवाल ने तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ. आरपीएस यादव ने किया।

मुक्त चिंतन
News Letter
॥ सरस्वती नः सुभगा मयस्करत् ॥
उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा निर्गत अधिनियम संख्या 10, 1999 द्वारा स्थापित
A Quarterly News Bulletin of U.P. Rajarshi Tandon Open University, Allahabad
हम पहुँचे वहाँ, पहुँचा न कोई जहाँ
18 मार्च 2018

उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय की विद्या परिषद् की 50वीं बैठक दिनांक 18 मार्च, 2018 को अपराहन 03:00 बजे कमेटी कक्ष में आहूत की गई। बैठक की अध्यक्षता प्रो0 कामेश्वर नाथ सिंह, कुलपति, उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद ने की। बैठक में कई महत्वपूर्ण निर्णय लिया गया।

बैठक में प्रो0 के. एस. मिश्रा, डीन (कला संकाय), इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, डॉ0 पी0पी0 दुबे, निदेशक, कृषि विज्ञान विद्याशाखा, उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, डॉ0 आर0पी0एस0 यादव, निदेशक, मानविकी विद्याशाख, उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, डॉ0 आशुतोष गुप्ता निदेशक, विज्ञान विद्याशाखा, उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, प्रो0 पी0के0 पाण्डेय, शिक्षा विद्याशाखा, उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, डॉ0 टी0एन0 दुबे, पुस्तकालयाध्क्ष, उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, डॉ0 इति तिवारी, एसोसिएट प्रोफेसर, समाज विज्ञान विद्याशाखा, उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, डॉ0 सन्तोषा कुमार, एसोसिएट प्रोफेसर, समाज विज्ञान विद्याशाखा, उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, डॉ0 साधना श्रीवास्तव असिस्टेन्ट प्रोफेसर, मानविकी विद्याशाखा, उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय,श्री सुनील कुमार, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, मानविकी विद्याशाखा, उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, श्री एस0पी0 सिंह, वित्त अधिकारी, उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद (विशेष आमंत्रित) एवं डॉ0 गिरिजा शंकर शुक्ल निदेशक, स्वास्थ्य विज्ञान विद्याशाखा/कुलसचिव, उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद उपस्थित रहे।

विद्या परिषद् की बैठक की अध्यक्षता करते हुए मा0 कुलपति जी एवं उपस्थित मा0सदस्यगण।

॥ सरस्वती नः सुभगा मयस्करत् ॥

मुक्त चिंतन News Letter

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा निर्गत अधिनियम संख्या 10, 1999 द्वारा स्थापित

A Quarterly News Bulletin of U.P. Rajarshi Tandon Open University, Allahabad

हम पहुँचे वहाँ, पहुँचा न कोई जहाँ

19 मार्च 2018

मुविवि में रिसर्च मेथोडालॉजी पर साप्ताहिक कार्यशाला प्रारम्भ

दिनांक 19 मार्च, 2018 को उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय के विज्ञान विद्याशाखा के तत्वावधान में सरस्वती परिसर के लोकमान्य तिलक शास्त्रार्थ सभागार में ''नेशनल वर्कशॉप कम ट्रेनिंग प्रोग्राम ऑन रिसर्च मेथोडालॉजी : डेटा एनालिसिस विथ आक्टेव रिपोर्ट राइटिंग बाई लेटेक्स'' विषय पर सात दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित की गयी। सात दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला के उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि कानपुर विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो0 के0बी0 पाण्डेय जी रहे एवं अध्यक्षता विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो0 कामेश्वर नाथ सिंह जी ने की।

प्रारम्भ में कार्यशाला के बारे में विज्ञान विद्याशाखा के निदेशक डॉ0 आशुतोष गुप्ता ने जानकारी दी। विश्वविद्यालय के बारे में कार्यशाला के संयोजक डॉ0 गिरीश कुमार द्विवेदी ने बताया। उद्घाटन सत्र का संचालन आयोजन सचिव डॉ0 श्रुति एवं धन्यवाद ज्ञापन कुलसचिव प्रो0 जी0एस0 शुक्ल ने दिया।

सात दिवसीय कार्यशाला के प्रथम दिन विभिन्न तकनीकी सत्रों में विषय विशेषज्ञों में प्रो0 ए0आर0 सिददीकी, भूगोल विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, डॉ0 कुणाल केसरी, गोविन्द वल्लभ पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान, झूंसी, डॉ0 प्रमेन्द्र सिंह पुण्डीर, सांख्यिकी विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय, डॉ0 अशोक कुमार भोराल सांख्यिकी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, डॉ0 ए0के0 चतुर्वेदी गणित विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, डॉ0 आशुतोष गुप्ता, डॉ0 जी0के0 द्विवेदी, डॉ0 श्रुति एवं मनोज कुमार बलवन्त ने प्रशिक्षण प्रदान किया।

माननीय कुलपति प्रो0 कामेश्वर नाथ सिंह जी के साथ वार्ता करते हुए माननीय अतिथि प्रो0 के0बी0 पाण्डेय

उद्घाटन सत्र का संचालन करती हुई आयोजन सचिव डॉ0 श्रुति एवं मंचासीन माननीय अतिथि।

सात दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का दीप प्रज्ज्वलित कर उद्घाटन करते हुए माननीय अतिथि।

माननीय अतिथियों को पुष गुच्छ प्रदान कर उनका स्वागत करते हुए राष्ट्रीय कार्यशाला के सदस्यगण।

विश्वविद्यालय के बारे में बताते हुए कार्यशाला के संयोजक डॉ0 गिरीश कुमार द्विवेदी

कार्यशाला के बारे में बताते हुए विज्ञान विद्याशाखा के निदेशक डॉ0 आशुतोश गुप्ता

माननीय अतिथियों को अंगवस्त्र एवं स्मृति चिन्ह प्रदान कर उनका स्वागत करते हुए मा0 कुलपति जी एवं माननीय कुलपति जी को अंगवस्त्र एवं स्मृति चिन्ह प्रदान करते हुए माननीय अतिथि तथा कार्यशाला के सदस्यगण।

प्रो0 के0बी0 पाण्डेय

समाज के कल्याण के लिए हो शोध कार्य–प्रो0 पाण्डेय

अपने विचार मुख्य अतिथि कानपुर विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो0 के0बी0 पाण्डेय ने कहा कि शोध वास्तव में एक साधना है। शोध का लक्ष्य केवल उपाधि प्राप्ति तक ही सीमित नहीं होना चाहिए। शोध के प्रति शिक्षार्थी की दृष्टि सजग रहनी चाहिए। हमेशा समाज के लिए उस शोध की उपयोगिता प्रधान होनी चाहिए, जिससे उसका शोध समाज के कल्याण के लिए काम आ सके।

प्रो0 पाण्डेय ने सरस्वती परिसर स्थित लोकमान्य तिलक शास्त्रार्थ सभागार में आयोजित राष्ट्रीय कार्यशाला में कहा कि शोध का क्षेत्र बहुत व्यापक है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने शोध के पहले उसकी पद्धति का ज्ञान प्रदान करने के लिए प्री–पी0एच0डी0 कोर्स वर्क का प्रावधान रखा है। प्रो0 पाण्डेय ने कहा कि शोध में विषय चयन के बाद उसको दिशा देना आवश्यक है। वह दिशा समाज के लिए उपयोगी होनी चाहिए। प्रो0 पाण्डेय ने जोर देकर कहा कि यदि यह बात हमेशा मन में रखें कि जो शोध हम कर रहे हैं उससे प्राणिमात्र का दुःख दूर होगा, तो हमें जरूर अपने अनुसंधान की सही दृष्टि मिल सकेगी।

प्रो0 पाण्डेय ने कहा कि यदि हम अपने देश के लिए शोध के माध्यम से कुछ करना चाहते हैं तो हमें अपने गांवों के किसानों और मजदूरों के लिए कुछ करना चाहिए। इसके लिए सप्ताह में एक दिन ग्राम प्रवास का प्रावधान करके छात्रें को इस दिशा में प्रवृत्त किया जा सकता है।

प्रो0 कामेश्वर नाथ सिंह

रूचि के अनुसार करें शोध विषय का चुनाव–कुलपति

कुलपति प्रो0 कामेश्वर नाथ सिंह ने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि व्यक्ति को अपनी रूचि के अनुसार शोध विषय का चुनाव करना चाहिए और शोध के उद्देश्य, विषय क्षेत्र आयाम, प्रविधियों तथा विश्लेषण आदि सभी का निर्धारण और योजना इस ढंग से करनी चाहिए कि उसका लाभ जनसामान्य को मिल सके। उन्होंने कहा कि हमें अपनी दृष्टि व्यापक, समाजोन्मुखी और यथार्थवादी रखनी चाहिए। प्रो0 सिंह ने कहा कि हमारा कैरियर केवल हमारे परिवार के लिए ही नहीं हमारे देश और समाज के लिए काम में आने वाला होना चाहिए, केवल हमारी निज की अकादमिक उन्नति और अभिवृद्धि की दृष्टि एकांगी और संकीर्ण है। उन्होंने समस्या केन्द्रित शोध के अध्ययन को प्रोत्साहित करने पर बल दिया। शोध कार्य का योगदान ज्ञान संवर्द्धन के लिए होना चाहिए।

धन्यवाद ज्ञापन करते हुए कुलसचिव प्रो0 जी0एस0 शुक्ल

e-paper : www.dailynewsactivist.com इलाहाबाद, मंगलवार, 20 मार्च 2018, चैत्र मास शुक्ल पक्ष तृतीया, संवत् 2075 विक्रमी

वर्ष-11, अंक-154, पृष्ठ-16, मूल्य- ₹ 2.00, नगर संस्करण

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

डेली न्यूज़ ऐक्टिविस्ट

RNI NO.: UPHIN/2007/42669 संस्करण : लखनऊ ■ इलाहाबाद

शब्द शब्द संघर्ष

website : www.dnahindi.com

समाज कल्याण के लिए हो शोध कार्यः प्रो. पाण्डेय

डेली न्यूज़ नेटवर्क

- रूचि के अनुसार करें शोध विषय का चुनावः प्रो. केएन सिंह
- मुविवि में रिसर्च मेथोडालॉजी पर साप्ताहिक कार्यशाला

इलाहाबाद। शोध वास्तव में एक साधना है। शोध का लक्ष्य केवल उपाधि प्राप्ति तक ही सीमित नहीं होना चाहिए। शोध के प्रति शिक्षार्थी की दृष्टि सजग रहनी चाहिए। हमेशा समाज के लिए उस शोध की उपयोगिता प्रधान होनी चाहिए, जिससे उसका शोध समाज के कल्याण के लिए काम आ सके। उक्त विचार मुख्य अतिथि कानपुर विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. केबी पाण्डेय ने सोमवार को उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय के विज्ञान विद्याशाखा के तत्वावधान में आयोजित सात दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला 'नेशनल वर्कशॉप कम ट्रेनिंग प्रोग्राम ऑन रिसर्च मेथोडालॉजी: डेटा एनालिसिस विथ आक्टेव रिपोर्ट राइटिंग बाई लेटेक्स' में व्यक्त किए।

प्रो. पाण्डेय ने कहा कि शोध का क्षेत्र बहुत व्यापक है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने शोध के पहले उसकी पद्धति का ज्ञान प्रदान करने के लिए प्री-पीएचडी कोर्स वर्क का प्रावधान रखा है। प्रो. पाण्डेय ने कहा कि शोध में विषय चयन के बाद उसको दिशा देना आवश्यक है। वह दिशा समाज के लिए उपयोगी होनी चाहिए। प्रो. पाण्डेय ने जोर देकर कहा कि यदि यह बात हमेशा मन में रखें कि जो शोध हम कर रहे हैं उससे प्राणिमात्र का दुःख दूर होगा, तो हमें जरूर अपने अनुसंधान की सही दृष्टि मिल सकेगी। प्रो. पाण्डेय ने कहा कि यदि हम अपने देश के लिए शोध के माध्यम से कुछ करना चाहते हैं तो हमें अपने गांवों के किसानों और मजदूरों के लिए कुछ करना चाहिए।

कुलपति प्रो. केएन सिंह ने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि व्यक्ति को अपनी रूचि के अनुसार शोध विषय का चुनाव करना चाहिए और शोध के उद्देश्य, विषय क्षेत्र आयाम, प्रविधियों तथा विश्लेषण आदि सभी का निर्धारण और योजना इस ढंग से करनी चाहिए कि उसका लाभ जनसामान्य को मिल सके। उन्होंने कहा कि हमें अपनी दृष्टि व्यापक, समाजोन्मुखी और यथार्थवादी रखनी चाहिए। प्रो. सिंह ने कहा कि हमारा कैरियर केवल हमारे परिवार के लिए ही नहीं हमारे देश और समाज के लिए काम में आने वाला होना चाहिए, केवल हमारी निज की अकादमिक उन्नति और अभिवृद्धि की दृष्टि एकांगी और संकीर्ण है। उन्होंने समस्या केन्द्रित शोध के अध्ययन को प्रोत्साहित करने पर बल दिया। शोध कार्य का योगदान ज्ञान संवर्द्धन के लिए होना चाहिए।

प्रारम्भ में कार्यशाला के बारे में विज्ञान विद्याशाखा के निदेशक डॉ. आशुतोष गुप्ता ने जानकारी दी। विश्वविद्यालय के बारे में कार्यशाला के संयोजक डॉ. गिरीश कुमार द्विवेदी ने बताया। उद्घाटन सत्र का संचालन आयोजन सचिव डॉ. श्रुति एवं धन्यवाद ज्ञापन कुलसचिव प्रो. जीएस शुक्ल ने दिया। सात दिवसीय कार्यशाला के प्रथम दिन विभिन्न तकनीकी सत्रों में विषय विशेषज्ञों में इविवि के प्रो. एआर सिद्दीकी, गोविन्द वल्लभ पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान के डॉ. कुणाल केसरी, डॉ. प्रमेन्द्र सिंह, डॉ. अशोक कुमार भोराल, डॉ. एके चतुर्वेदी, डॉ. आशुतोष गुप्ता, डॉ. जीके द्विवेदी, डॉ. श्रुति एवं मनोज कुमार बलवन्त ने प्रशिक्षण प्रदान किया।

इलाहाबाद 20-03-2018

http://www.dailynewsactivist.com

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक डेली न्यूज़ ऐक्टिविस्ट

शब्द शब्द संघर्ष

इलाहाबाद, मंगलवार, 20 मार्च, 2018

जनसंदेश टाइम्स

परख सच की

इलाहाबाद, वाराणसी, लखनऊ, कानपुर एवं गोरखपुर से प्रकाशित

श्रीलंकाई दर्शकों का समर्थन भारत को मिला : रोहित -13

मुविवि में रिसर्च मेथोडालॉजी पर साप्ताहिक कार्यशाला प्रारम्भ

समाज के कल्याण के लिए हो शोध कार्य : प्रो0 पाण्डेय

रूचि के अनुसार करें शोध विषय का चुनाव : कुलपति

इलाहाबाद। शोध वास्तव में एक साधना है। शोध का लक्ष्य केवल उपाधि प्राप्ति तक ही सीमित नहीं होना चाहिए। शोध के प्रति शिक्षार्थी की दृष्टि सजग रहनी चाहिए। हमेशा समाज के लिए उस शोध की उपयोगिता प्रधान होनी चाहिए, जिससे उसका शोध समाज के कल्याण के लिए काम आ सके। उक्त विचार मुख्य अतिथि कानपुर विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो0 के0बी0 पाण्डेय ने सोमवार को उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय के विज्ञान विद्याशाखा के तत्वावधान में आयोजित सात दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला नेशनल वर्कशॉप कम ट्रेनिंग प्रोग्राम ऑन रिसर्च मेथोडालॉजी: डेटा एनालिसिस विथ आक्टेव रिपोर्ट राइटिंग बाई लेटेक्स में व्यक्त किए।

प्रो0 पाण्डेय ने सरस्वती परिसर स्थित लोकमान्य तिलक शास्त्रार्थ सभागार में आयोजित राष्ट्रीय कार्यशाला कहा कि शोध का क्षेत्र बहुत व्यापक है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने शोध के पहले उसकी पद्धति का ज्ञान प्रदान करने के लिए प्री-पी0एच0डी0 कोर्स वर्क का प्रावधान रखा है। प्रो0 पाण्डेय ने कहा कि शोध में विषय चयन के बाद उसको दिशा देना आवश्यक है। वह दिशा समाज के लिए उपयोगी होनी चाहिए। प्रो0 पाण्डेय ने जोर देकर कहा कि यदि यह बात हमेशा मन में रखें कि जो शोध हम कर रहे हैं उससे प्राणिमात्र का दुःख दूर होगा, तो हमें जरूर अपने अनुसंधान की सही दृष्टि मिल सकेगी।

प्रो0 पाण्डेय ने कहा कि यदि हम अपने देश के लिए शोध के माध्यम से कुछ करना चाहते हैं तो हमें अपने गांवों के किसानों और मजदूरों के लिए कुछ करना चाहिए। इसके लिए सप्ताह में एक दिन ग्राम प्रवास का प्रावधान कर-के छात्रों को इस दिशा में प्रवृत्त किया जा सकता है।

कुलपति प्रो0 कामेश्वर नाथ सिंह ने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि व्यक्ति को अपनी रूचि के अनुसार शोध विषय का चुनाव करना चाहिए और शोध के उद्देश्य, विषय क्षेत्र आयाम, प्रविधियों तथा विश्लेषण आदि सभी का निर्धारण और योजना इस ढंग से करनी चाहिए कि उसका लाभ जनसामान्य को मिल सके। उन्होंने कहा कि हमें अपनी दृष्टि व्यापक, समाजोन्मुखी और यथार्थवादी रखनी चाहिए। प्रो0 सिंह ने कहा कि हमारा कैरियर केवल हमारे परिवार के लिए ही नहीं हमारे देश और समाज के लिए काम में आने वाला होना चाहिए, केवल हमारी निज की अकादमिक उन्नति और अभिवृद्धि की दृष्टि एकांगी और संकीर्ण है। उन्होंने समस्या केन्द्रित शोध के अध्ययन को प्रोत्साहित करने पर बल दिया। शोध कार्य का योगदान ज्ञान संवर्द्धन के लिए होना चाहिए।

प्रारम्भ में कार्यशाला के बारे में विज्ञान विद्याशाखा के निदेशक डॉ0 आशुतोष गुप्ता ने जानकारी दी। विश्वविद्यालय के बारे में कार्यशाला के संयोजक डॉ0 गिरीश कुमार द्विवेदी ने बताया। उद्घाटन सत्र का संचालन आयोजन सचिव डॉ0 श्रुति एवं धन्यवाद ज्ञापन कुलसचिव प्रो0 जी0एस0 शुक्ल ने दिया। सात दिवसीय कार्यशाला के प्रथम दिन विभिन्न तकनीकी सत्रों में विषय विशेषज्ञों में प्रो0 ए0आर0 सिद्दीकी, भूगोल विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, डॉ0 कुणाल केसरी, गोविन्द वल्लभ पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान, झूंसी, डॉ0 प्रमेन्द्र सिंह पुण्डीर, सांख्यिकी विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय, डॉ0 अशोक कुमार भोराल सांख्यिकी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, डॉ0 ए0के0 चतुर्वेदी गणित विभाग, इलाहाबाद विश्व विद्यालय, डॉ0 आशुतोष गुप्ता, डॉ0 जी0के0 द्विवेदी, डॉ0 श्रुति एवं मनोज कुमार बलवन्त ने प्रशिक्षण प्रदान किया।

सात दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला में छात्र-छात्राओं को संबोधित करते मुख्य अतिथि

मुक्त चिंतन News Letter
उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा निर्गत अधिनियम संख्या 10, 1999 द्वारा स्थापित
A Quarterly News Bulletin of U.P. Rajarshi Tandon Open University, Allahabad
॥ सरस्वती नः सुभगा मयस्करत् ॥
हम पहुँचे वहाँ, पहुँचा न कोई जहाँ
20 मार्च 2018

कार्य परिषद् की 94वीं बैठक

दिनांक 20 मार्च, 2018

मा0 कुलपति जी के अध्यक्षता में उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, कार्य परिषद् की 94वीं बैठक दिनांक 20 मार्च, 2018 को अपराह्न 03:00 बजे कमेटी कक्ष में आहूत की गई। बैठक की अध्यक्षता प्रो0 कामेश्वर नाथ सिंह, कुलपति, उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद ने की। बैठक में कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए गये।

बैठक में डॉ0 पी0पी0 दुबे, निदेशक, कृषि विज्ञान विद्याशाखा, उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, डॉ0 आर0पी0एस0 यादव, निदेशक, मानविकी विद्याशाखा, उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, प्रो0 पी0के0 पाण्डेय, प्रोफेसर, शिक्षा विद्याशाखा, उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, डॉ0 इति तिवारी, एसोसिएट प्रोफेसर, समाज विज्ञान विद्याशाखा, उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, डॉ0 जी. के. द्विवेदी असि. प्रोफेसर, शिक्षा विद्याशाखा, उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, श्री एस0पी0 सिंह, वित्त अधिकारी, उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद (विशेष आमंत्रित) एवं डॉ0 गिरिजा शंकर शुक्ल, कुलसचिव, उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, उपस्थित रहे।

कार्य परिषद् की बैठक की अध्यक्षता करते हुए मा0 कुलपति जी एवं उपस्थित मा0सदस्यगण।

मुक्त चिंतन News Letter

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा निर्गत अधिनियम संख्या 10, 1999 द्वारा स्थापित

A Quarterly News Bulletin of U.P. Rajarshi Tandon Open University, Allahabad

॥ सरस्वती नः सुभगा मयस्करत् ॥

हम पहुँचे वहाँ, पहुँचा न कोई जहाँ

21 मार्च 2018

मुक्त विश्वविद्यालय ने जारी किया छात्रहित में टोल–फ्री नम्बर

उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय की शीर्ष प्राथमिकता विद्यार्थी हित है। 22 करोड़ की जनसंख्या वाले इस विशाल प्रदेश में कोने–कोने तक विद्यार्थियों तक अभिगम्यता एक चुनौती है, जिसके कारण समय से अपेक्षित सूचनायें विद्यार्थियों तक नहीं पहुंच पाती। परिणामतः प्रवेश से वंचित रह जाना, परीक्षा का छूटना एवं परीक्षा परिणाम का समय से मालूम न होना एक सामान्य बात होती है। उक्त वक्तव्य उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 कामेश्वर नाथ सिंह ने बुधवार को विश्वविद्यालय में टोल–फ्री नम्बर के शुभारम्भ के अवसर पर दिया। ज्ञातव्य है कि छात्रें के व्यापक हित में विश्वविद्यालय का यह टोल–फ्री नम्बर सोमवार 26 मार्च 2018 से कार्य करना प्रारम्भ करेगा।

उल्लेखनीय है कि संवादहीनता के चलते विश्वविद्यालय की प्रवेश, परीक्षा, रिजल्ट एवं पाठ्यसामग्री से सम्बन्धित सूचनाएं समय से प्रेषित नहीं हो पाती, परिणामतः छात्र परेशान रहता है। कुलपति प्रो0 सिंह ने कहा कि टोल–फ्री नम्बर प्रारम्भ होने के बाद विद्यार्थियों की इस जटिल समस्या का समाधान हो जायेगा। कुलपति प्रो0 सिंह द्वारा आज अपने कार्यकाल का एक माह पूर्ण होने पर दिये गये इस तोहफे पर विश्वविद्यालय के अधिकारियों तथा कर्मचारियों ने संतोष व्यक्त किया एवं इसे विश्वविद्यालय के हित में बताया।

उल्लेखनीय है कि प्रदेश के विश्वविद्यालयों में यह प्रथम विश्वविद्यालय है, जिसने विद्यार्थियों के लिये टोल–फ्री नम्बर जारी किया है। प्रदेश के विभिन्न स्थानों पर रह रहे छात्र अब आगामी 26 मार्च 2018 से टोल–फ्री नम्बर 1800–120–111–333 पर डायल कर विश्वविद्यालय से सम्बन्धित जानकारी प्राप्त कर सकेंगे। इस अवसर पर कुलसचिव प्रो0 जी0एस0 शुक्ला, वित्त अधिकारी श्री एस0पी0 सिंह, परीक्षा नियंत्रक डॉ0 जी0के0 द्विवेदी, डॉ0 पी0पी0 दूबे, डॉ0 आर0पी0एस0 यादव, डॉ0 आशुतोष गुप्ता, प्रो0 पी0के0 पाण्डेय, डॉ0 टी0एन0 दूबे आदि उपस्थित रहे।

विश्वविद्यालय के मा0 कुलपति प्रो0 कामेश्वर नाथ सिंह विश्वविद्यालय में टोल–फ्री नम्बर के शुभारम्भ करते हुए।

इलाहाबाद, गुरुवार
22 मार्च 2018
नगर संस्करण
मूल्य ₹ 5.00
पृष्ठ 24

दैनिक जागरण

www.jagran.com

भारत-चीन के स्टील फ्लैंग पर एंटी डंपिंग शुल्क लगा } 17 वामकाल के भ्रष्टाचारी बच नहीं पाएंगे : विप्लव } 17

मुक्त विवि के विद्यार्थियों को मिला टोल फ्री नंबर का तोहफा

जासं, इलाहाबाद : उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय ने अपने विद्यार्थियों को सहूलियत देते हुए टोल फ्री नंबर जारी किया है। कुलपति प्रो. कामेश्वर नाथ सिंह ने अपने कार्यकाल के एक माह पूरे होने पर बुधवार को **टोल-फ्री नंबर 1800-120-111-333** का उद्घाटन किया। अब विद्यार्थी देश के किसी भी कोने से इस नंबर पर मुफ्त में कोई भी जानकारी प्राप्त कर सकेंगे। विश्वविद्यालय का यह टोल-फ्री नंबर 26 मार्च 2018 से कार्य करना प्रारम्भ करेगा।

22 करोड़ की जनसंख्या वाले इस विशाल प्रदेश में कोने-कोने तक विद्यार्थियों तक पहुंचना विश्वविद्यालय के सामने एक बड़ी चुनौती है। समय से कई बार अपेक्षित सूचनाएं विद्यार्थियों तक नहीं पहुंच पातीं। इससे प्रवेश से वंचित रह जाना, परीक्षा का छूटना एवं परीक्षा परिणाम की समय से जानकारी न होना एक सामान्य बात होती है। इस समस्या को देखते हुए कुलपति की पहल पर विश्वविद्यालय ने टोल फ्री नंबर जारी करने का फैसला किया है। उद्घाटन के बाद कुलपति ने कहा कि टोल-फ्री नंबर शुरू होने के बाद विद्यार्थियों की इस जटिल समस्या का समाधान होगा। प्रदेश के सभी विश्वविद्यालयों में यह प्रथम विश्वविद्यालय है, जिसने विद्यार्थियों के लिए टोल-फ्री नंबर जारी किया है। उद्घाटन अवसर पर कुलसचिव प्रो. जीएस शुक्ला, वित्त अधिकारी एसपी सिंह, परीक्षा नियंत्रक डॉ. जीके द्विवेदी, डॉ. पीपी दुबे, डॉ. आरपीएस यादव, डॉ. आशुतोष गुप्ता, प्रो. पीके पांडेय, डॉ. टीएन दुबे आदि उपस्थित रहे।

उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय में बुधवार को टोल फ्री नंबर का उद्घाटन करते कुलपति प्रो. कामेश्वर नाथ सिंह।

जनसंदेश टाइम्स

परख सच की

मुक्त विवि ने छात्रहित में जारी किया टोल फ्री नम्बर

इलाहाबाद। उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय के छात्र अब टोल फ्री नम्बर 1800-120-111-333 पर डायल कर विश्वविद्यालय से सम्बन्धित जानकारी प्राप्त कर सकेंगे, यह 26 मार्च से कार्य करना प्रारम्भ करेगा। उक्त बातें उ.प्र राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. कामेश्वर नाथ सिंह ने बुधवार को टोल फ्री का शुभारम्भ करते हुए बताया कि प्रदेश में विद्यार्थियों तक अभिगम्यता एक चुनौती है, जिसके कारण समय से अपेक्षित सूचनायें विद्यार्थियों तक नहीं पहुंच पाती। परिणामतः प्रवेश से वंचित रह जाना, परीक्षा का छूटना एवं परीक्षा परिणाम का समय से मालूम न होना एक सामान्य बात होती है। अतः छात्रों के व्यापक हित में विश्वविद्यालय का यह टोल फ्री नम्बर सोमवार 26 मार्च से कार्य करना प्रारम्भ करेगा। उन्होंने कहा कि संवादहीनता के चलते विश्वविद्यालय की प्रवेश, परीक्षा, रिजल्ट एवं पाठ्यसामग्री से सम्बन्धित सूचनाएं समय से प्रेषित नहीं हो पाती और छात्र परेशान रहता है। कुलपति ने कहा कि इसके प्रारम्भ होने के बाद विद्यार्थियों की इस जटिल समस्या का समाधान हो जायेगा। उल्लेखनीय है कि प्रदेश के विश्वविद्यालयों में यह प्रथम विश्वविद्यालय है, जिसने विद्यार्थियों के लिये टोल-फ्री नम्बर जारी किया है। प्रदेश के विभिन्न स्थानों पर रह रहे छात्र अब 26 मार्च से टोल-फ्री नम्बर पर डायल कर विश्वविद्यालय से सम्बन्धित जानकारी प्राप्त कर सकेंगे। इस अवसर पर कुलसचिव प्रो. जी.एस शुक्ला, वित्त अधिकारी एस.पी सिंह, परीक्षा नियंत्रक डा. जी.के द्विवेदी, डा. पी.पी दूबे, डा. आरपीएस यादव, डा. आशुतोष गुप्ता, प्रो. पी.के पाण्डेय, डा. टी.एन दूबे आदि उपस्थित रहे।

भारत की एलावेनिल का विश्व रिकॉर्ड पर स्वर्णिम निशाना पेज16 | निजी क्षेत्र में कर मुक्त ग्रेच्युटी की राशि दोगुनी पेज17

हिन्दुस्तान

तरक्की को चाहिए नया नजरिया

www.livehindustan.com

मुविवि में बीएड व स्पेशल बीएड का दाखिला प्रारंभ

मौका

इलाहाबाद | वरिष्ठ संवाददाता

राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय के सत्र 2018-19 में बीएड एवं बीएड (स्पेशल एजुकेशन) की ऑनलाइन प्रवेश प्रक्रिया शुरू हो गयी है। प्रवेश परीक्षा के लिए ऑनलाइन पंजीकरण तथा फीस जमा करने की अंतिम तिथि 12 अप्रैल है।

आवेदन करने की अंतिम तिथि 17 अप्रैल तथा भरे हुए आवेदन पत्र की हार्डकॉपी को भेजने की आखिरी तारीख 25 अप्रैल है। प्रवेश परीक्षा 5 मई को होगी। शिक्षा विद्याशाखा के प्रभारी प्रो. पीके पांडेय ने बताया कि विश्वविद्यालय की वेबसाइट **www.uprtou.ac.in** पर प्रवेश सूचना विवरणिका अपलोड कर दी गयी है।

बीएड के लिए 10 अध्ययन केन्द्रों बीएसएसडी कॉलेज कानपुर, दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय हिन्दू कॉलेज मुरादाबाद, टीडी कॉलेज जौनपुर, शिबली नेशनल पीजी कॉलेज आजमगढ़, डीजे कॉलेज बागपत, उपरदहा डिग्री कॉलेज बरौत इलाहाबाद, चौधरी तुलसीराम यादव महाविद्यालय इलाहाबाद, श्याम लाल सरस्वती महाविद्यालय बुलंदशहर एवं श्रीरति राम महाविद्यालय मथुरा में 50-50 सीटों पर प्रवेश होंगे।

बीएड (स्पेशल एजुकेशना) में आठ अध्ययन केन्द्रों विकलांग केन्द्र इलाहाबाद, इसराजी देवी शिक्षण संस्थान इलाहाबाद, मूक बधिर संस्थान इलाहाबाद, इंटीग्रेटेड इंस्टीट्यूट फॉर द डिसेबल्ड करौंधी वाराणसी, टीडी कॉलेज (विकलांग पुनर्वास केन्द्र) जौनपुर, ट्रेनिंग कॉलेज फॉर टीचर्स ऑफ द डेफ ऐशबाग लखनऊ, खादी ग्रामोद्योग विकास समिति झूंसी इलाहाबाद तथा फ्रेंड्स ऑफ हैंडीकैप इंडिया स्वामी सत्यानन्द सरस्वतिवाणी सेन्टर फॉर हियरिंग एंड मेंटली रिटार्टेड चिल्ड्रेन मेरठ में 40-40 सीटों पर प्रवेश होंगे।

दो अप्रैल तक जमा करें प्रवक्ता के फार्म

उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग ने प्रवक्ता राजकीय इंटर कॉलेज (पुरुष शाखा) के 18 विषयों के लिए आवेदन पत्र/अभिलेख प्राप्त करने की अंतिम तिथि 30 मार्च से बढ़ाकर दो अप्रैल कर दी है। 30 मार्च को अवकाश के कारण अंतिम तिथि बढ़ाई गई है। हालांकि आवेदन पत्र समेत अन्य फार्म वेबसाइट से डाउनलोड करने की अंतिम 30 मार्च ही रहेगी।

इलाहाबाद, गुरुवार
22 मार्च 2018
नगर संस्करण
मूल्य ₹ 5.00
पृष्ठ 24

दैनिक जागरण

www.jagran.com

भारत-चीन के स्टील फ्लैंग पर एंटी डंपिंग शुल्क लगा } 17 वामकाल के भ्रष्टाचारी बच नहीं पाएंगे : विप्लव } 17

यूपीआरटीओयू में फिल्म फेस्टिवल 27 से

जासं, इलाहाबाद : उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय सेमिनार व फिल्म फेस्टिवल 27 व 28 मार्च को होगा। फिल्म फेस्टिवल की थीम हिंदी सिनेमा में मूल्यों के बदलते प्रतिरूप रखा गया है। आयोजन फाफामऊ स्थित सरस्वती परिसर के शैक्षणिक भवन में होगा। फिल्म फेस्टिवल में जिन विषयों से संबंधित फिल्मों का प्रदर्शन होगा, उनमें प्रमुख रूप से हिंदी सिनेमा और सत्यनिष्ठा, हिंदी सिनेमा और उपभोक्ता वाद, हिंदी सिनेमा और सामाजिक भाईचारा, हिंदी सिनेमा और प्रेम के बदलते आयाम, हिंदी सिनेमा और अहिंसा का स्वरूप, हिंदी सिनेमा और न्याय का सवाल, हिंदी सिनेमा और मानव अस्तित्व की समस्याएं, हिंदी सिनेमा और पर्यावरण, हिंदी सिनेमा और नारी अस्मिता व हिंदी सिनेमा और जीवन दर्शन है। फिल्म फेस्टिवल के कोआर्डिनेटर यूपीआरटीओयू के रीजनल सेंटर इलाहाबाद के निदेशक डॉ. अतुल मिश्र ने बताया कि सिनेमा ने 125 साल के अपने सफरनामे में दुनिया को बेहतर बनाने में अहम भूमिका निभाई है। हमारा उद्देश्य मूल्यों में आए बदलावों पर बहस छेड़ना है। यह आयोजन दैनिक जागरण के फिल्म फेस्टिवल से प्रेरित है।

जनसंदेश टाइम्स
परख सच की
इलाहाबाद, शुक्रवार, 23 मार्च, 2018
हंगामे के बीच फिर से लोकसभा स्थगित - 15

मुविवि में बीएड एवं स्पेशल बीएड का प्रवेश प्रारम्भ

इलाहाबाद। उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय के सत्र 2018-19 में बी.एड एवं बी.एड (स्पेशल एजूकेशन) की ऑनलाइन प्रवेश प्रक्रिया प्रारम्भ हो गयी है। इसकी प्रवेश परीक्षा हेतु पंजीकरण तथा शुल्क चालान प्रति तथा ऑनलाइन शुल्क ट्रान्सफर की अंतिम तिथि 12 अप्रैल, ऑनलाइन आवेदन करने की अंतिम तिथि 17 अप्रैल तथा ऑनलाइन भरे आवेदन पत्र की हार्डकापी का ई-चालान की विश्वविद्यालय प्रति सहित प्रवेश आवेदन पत्र प्राप्ति की अंतिम तिथि 25 अप्रैल निर्धारित है। प्रवेश परीक्षा 5 मई को प्रस्तावित है। विद्याशाखा के प्रभारी प्रो. पी.के पाण्डेय ने उक्त जानकारी देते हुए बताया कि विश्वविद्यालय की वेबसाइट डब्यूपीआरटीओयू.एसी.इनक्ष पर प्रवेश सूचना विवरणिका अपलोड कर दी गयी है। प्रवेश के इच्छुक अभ्यर्थी वेबसाइट पर दी गयी प्रवेश हेतु निर्धारित अर्हता का अवलोकन कर ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि बी.एड के लिए प्रदेश के दस अध्ययन केन्द्रों बी.एस.एस.डी कालेज कानपुर, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर, हिन्दू कालेज मुरादाबाद, टी.डी कालेज जौनपुर, शिबली नेशनल पीजी कालेज, आजमगढ, डी.जे कालेज बड़ौत, बागपत, उपरदहा डिग्री कालेज, बरौत, इलाहाबाद, चैधरी तुलसीराम यादव महाविद्यालय, तुलसीनगर, इलाहाबाद, श्याम लाल सरस्वती महाविद्यालय, शिकारपुर, बुलन्दशहर एवं श्री रती राम महाविद्यालय, मथुरा में 50-50 सीटों पर प्रवेश होंगे। इसी प्रकार बी.एड (विशिष्ट शिक्षा) में प्रदेश में स्थित आठ अध्ययन केन्द्रों विकलांग केन्द्र, इलाहाबाद, इसराजी देवी शिक्षण संस्थान, इलाहाबाद, उ.प्र मूक बधिर संस्थान, इलाहाबाद, इंटीग्रेटेड इंस्टीटयूट फॉर द डिसेबल्ड करौंधी वाराणसी, टी.डी कालेज (विकलांग पुनर्वास केन्द्र) जौनपुर, ट्रेनिंग कालेज फार टीचर्स आफ द डेफ, ऐशबाग, लखनऊ, खादी ग्रामोद्योग विकास समिति झूंसी, इलाहाबाद तथा फेन्डस ऑफ हैण्डीकैप इण्डिया, स्वामी सत्यानन्द सरस्वतिक वाणी सेन्टर फार हियरिंग एण्ड मेन्टली रिटार्टेड चिल्ड्रेन, मेरठ में 40-40 सीटों पर प्रवेश होंगे।

e-paper : www.dailynewsactivist.com
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
डेली न्यूज़ ऐक्टिविस्ट
शब्द शब्द संघर्ष
website : www.dnahindi.com

मुविविः बीएड व स्पेशल बीएड में प्रवेश प्रारंभ

इलाहाबाद (डीएनएन)। उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय (मुविवि) के सत्र 2018-19 में बीएड एवं बीएड (स्पेशल एजुकेशन) की ऑनलाइन प्रवेश प्रक्रिया प्रारम्भ हो गयी है। बीएड तथा बीएड (स्पेशल एजुकेशन) की प्रवेश परीक्षा हेतु पंजीकरण तथा शुल्क चालान प्रति तथा ऑनलाइन शुल्क ट्रान्सफर की अंतिम तिथि 12 अप्रैल 2018 निर्धारित की गयी है। ऑनलाइन आवेदन करने की अंतिम तिथि 17 अप्रैल तथा ऑनलाइन भरे आवेदन पत्र की हार्डकापी को ई-चालान की विश्वविद्यालय प्रति सहित प्रवेश आवेदन पत्र प्राप्ति की अंतिम तिथि 25 अप्रैल 2018 निर्धारित की गयी है। प्रवेश परीक्षा 5 मई 2018 को प्रस्तावित है। उन्होंने बताया कि मुविवि की वेबसाइट 'डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यू डॉट यूपीआरटीओयू डॉट एसी डॉट इन' पर प्रवेश सूचना विवरणिका अपलोड कर दी गयी है।

शिक्षा विद्याशाखा के प्रभारी प्रो. पीके पाण्डेय ने बताया कि बीएड के लिए प्रदेश के 10 अध्ययन केन्द्रों बीएसएसडी कालेज कानपुर, दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर, हिन्दू कालेज मुरादाबाद, टीडी कालेज जौनपुर, शिबली नेशनल पीजी कालेज, आजमगढ़, डीजे कालेज बड़ौत, बागपत, उपरदहा डिग्री कालेज, बरौत, इलाहाबाद, चौधरी तुलसीराम यादव महाविद्यालय, तुलसीनगर, इलाहाबाद, श्याम लाल सरस्वती महाविद्यालय, शिकारपुर, बुलन्दशहर एवं श्री रती राम महाविद्यालय, मथुरा में 50-50 सीटों पर प्रवेश होंगे।

इसी प्रकार बीएड (विशिष्ट शिक्षा) में प्रदेश में स्थित आठ अध्ययन केन्द्रों विकलांग केन्द्र, इलाहाबाद, इसराजी देवी शिक्षण संस्थान, इलाहाबाद, उप्र मूक बधिर संस्थान, इलाहाबाद, इंटीग्रेटेड इंस्टीटयूट फॉर द डिसेबल्ड करौंधी वाराणसी, टीडी कालेज (विकलांग पुनर्वास केन्द्र) जौनपुर, ट्रेनिंग कालेज फार टीचर्स आफ द डेफ ऐशबाग, लखनऊ, खादी ग्रामोद्योग विकास समिति झूंसी, इलाहाबाद तथा फ्रेन्डस ऑफहैण्डीकैप इण्डिया, स्वामी सत्यानन्द सरस्वतिक वाणी सेन्टर फार हियरिंग एण्ड मेन्टली रिटार्टेड चिल्ड्रेन, मेरठ में 40-40 सीटों पर प्रवेश होंगे।

इलाहाबाद 23-03-2018
http://www.dailynewsactivist.com
डेली न्यूज़ ऐक्टिविस्ट

जनसंदेश टाइम्स
परख सच की
इलाहाबाद, रविवार, 25 मार्च, 2018
रेस्ट के बाद अब काउंट खेलेंगे विराट - 13
जवानों का मनोबल नहीं तोड़ सकती बुलेट - 15
www.jansandeshtimes.net

हिन्दी सिनेमा में मूल्यों के बदलते प्रतिरूप पर राष्ट्रीय संगोष्ठी 27 से

समारोह का उद्घाटन सरस्वती परिसर स्थित लोकमान्य तिलक शास्त्रार्थ सभागार में किया जायेगा

इलाहाबाद। सिनेमा मानव की सांस्कृतिक उपलब्धियों का एक महत्वपूर्ण कला रूप है। एक समन्वित कला होने के नाते यह संगीत, नृत्य, चित्रकला, अभिनय, साहित्य आदि को समेटे हुए है। बाजार के दबाव में उपभोक्तावाद ने जीवन के हर हिस्से को प्रभावित किया है। हिंदी सिनेमा के माध्यम से समाज में विभिन्न मूल्यों में आये इन्हीं बदलाव पर विस्तृत चर्चा के लिये उ.प्र राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय में दो दिवसीय 27-28 मार्च को हिन्दी सिनेमा में मूल्यों के बदलते प्रतिरूप विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित है। उक्त जानकारी आयोजन सचिव डा.अतुल कुमार मिश्र ने देते हुए बताया कि सिनेमा में जीवन के दार्शनिक एवं मूल्यगत सवाल भी पर्दे पर चलते फिरते कथानकों के जरिये आते हैं। इस दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार एवं फिल्म महोत्सव में हिन्दी सिनेमा और सत्यनिष्ठा, हिन्दी सिनेमा और उपभोक्तावाद, हिन्दी सिनेमा और सामाजिक भाईचारा, हिन्दी सिनेमा और प्रेम के बदलते आयाम, हिन्दी सिनेमा और अहिंसा का स्वरूप, हिन्दी सिनेमा और न्याय का सवाल, हिन्दी सिनेमा और मानव अस्तित्व की समस्यायें, हिन्दी सिनेमा और पर्यावरण, हिन्दी सिनेमा और नारी अस्मिता व हिन्दी सिनेमा और जीवन दर्शन आदि उप विषयों पर विद्वान वक्तागण विचार व्यक्त करेंगे। समारोह का उद्घाटन सरस्वती परिसर स्थित लोकमान्य तिलक शास्त्रार्थ सभागार में किया जायेगा। संगोष्ठी एवं फिल्म फेस्टिवल की अध्यक्षता कुलपति प्रो. कामेश्वर नाथ सिंह करेंगे। राष्ट्रीय संगोष्ठी के निदेशक डा. आरपीएस यादव, संयोजक डा.साधना श्रीवास्तव, सह संयोजक डा.सतीश चन्द्र जैसल, सलाहकार समिति एवं आयोजन समिति के सदस्यों ने फिल्म फेस्टिवल के सफल आयोजन की समीक्षा की। राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं फिल्म फेस्टिवल के आयोजन को लेकर युवाओं एवं रंगकर्मियों में विशेष उत्साह है।

रिसर्च मेथोडालॉजी पर साप्ताहिक कार्यशाला का समापन आज

इलाहाबाद। उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय के विज्ञान विद्याशाखा के तत्वावधान में आयोजित सात दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला ह्यनेशनल वर्कशॉप कम ट्रेनिंग प्रोग्राम ऑन रिसर्च मेथोडालॉजीः डेटा एनालिसिस विथ आक्टेव रिपोर्ट राइटिंग बाई लेटेक्सक्ष का समापन 25 मार्च को लोकमान्य तिलक शास्त्रार्थ सभागार में किया गया है। कुलसचिव प्रो. जी.एस शुक्ला ने बताया कि कार्यशाला की अध्यक्षता कुलपति प्रो. कामेश्वर नाथ सिंह करेंगे और मुख्य अतिथि इलाहाबाद राज्य विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. राजेन्द्र प्रसाद होंगे।

दैनिक जागरण
www.jagran.com
सीमा पर यथास्थिति में बदलाव की कोशिश न करे चीन: भारत } 17
सहा ने ठोका 20 गेंद में शतक } 18

मुक्त विश्वविद्यालय में खुलेगी 'जियो साइंसेज' विद्याशाखा

अजहर अंसारी • इलाहाबाद

जागरण विशेष

दूरस्थ शिक्षा से तकनीकी एवं प्रोफेशनल शिक्षा प्रदान करने की दिशा में उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय ने एक कदम और बढ़ाया है। भू-विज्ञान यानी भूमि और भूगोल से जुड़े महत्वपूर्ण कोर्स के संचालन के लिए कैंपस में जियो साइंसेज विद्या शाखा की स्थापना की जाएगी। इसमें भूगोल, भू-गर्भ विज्ञान, भूगणितीय विज्ञान, रिमोट सेंसिंग, जीआइएस (जियोग्राफिकल इंफारमेशन सिस्टम) अर्थ इंवायरमेंट, मेट्रोलॉजी, जियो साइंस लाइब्रेरियनशिप और क्लाइमेट साइंसेज आदि विषय होंगे। कुलपति प्रो. केएन सिंह ने इस दिशा में निर्देश जारी कर दिए हैं।

आगामी छमाही सत्र में यहां पर प्रस्तावित 'जियो-साइंस विद्याशाखा' काम करना शुरू कर देगी। शुरुआत में यहां पर स्नातक और परास्नातक स्तर पर भूगोल पाठ्यक्रम शुरू होंगे।

अगले साल से अन्य पाठ्यक्रम भी साकार रूप लेंगे। इसके लिए विषय विशेषज्ञों के साथ बोर्ड ऑफ स्टडीज की बैठक हो चुकी है। अकादमिक एवं एक्जिक्यूटिव काउंसिल में पारित होने के बाद इसमें तेजी आएगी।

कुलपति का कहना है कि समय की जरूरत को समझते हुए मैंने सीधे सीधे 'जियो साइंस विद्याशाखा' खोलने का निर्णय लिया है। इससे नियमित कक्षाओं में दाखिल न मिलने वाले छात्रों को सीधा फायदा होगा। उन्होंने स्पष्ट किया कि विश्वविद्यालय में ऐसे कोर्स की बाहुलता होने वाली है जो रोजगारपरक हैं। कुछ अनुपयोगी पाठ्यक्रमों को हटा भी दिया जाएगा।

मुक्त चिंतन

News Letter

॥ सरस्वती नः सुभगा मयस्करत् ॥

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा निर्गत अधिनियम संख्या 10, 1999 द्वारा स्थापित

A Quarterly News Bulletin of U.P. Rajarshi Tandon Open University, Allahabad

हम पहुँचे वहाँ, पहुँचा न कोई जहाँ

25 मार्च 2018

उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय के विज्ञान विद्याशाखा के तत्वावधान में 19 से 25 मार्च 2018 तक आयोजित 'रिसर्च मेथोडालॉजीः डाटा एनालिसिस विद आक्टेव एण्ड रिपोर्ट राइटिंग बाई लेटेक्स' विषयक साप्ताहिक राष्ट्रीय कार्यशाला–सह–प्रषिक्षण कार्यक्रम के समापन दिनांक 25 मार्च, 2018 को हुआ। समापन सत्र के मुख्य अतिथि इलाहाबाद राज्य विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. राजेन्द्र प्रसाद जी रहे एवं अध्यक्षता विश्वविद्यालय के मा0 कुलपति प्रो0 कामेश्वर नाथ सिंह जी ने की।

कार्यशाला का संचालन आयोजन सचिव डॉ. श्रुति ने किया। कार्यशाला की रिपोर्ट कार्यशाला के निदेशक डॉ. आशुतोष गुप्ता ने प्रस्तुत की। धन्यवाद ज्ञापन कार्यशाला संयोजक डॉ. जी. के. द्विवेदी ने किया। अन्त में प्रतिभागियों को प्रमाण–पत्र वितरित किये गये।

कार्यशाला का संचालन करती हुई आयोजन सचिव डॉ. श्रुति एवं मंचासीन मा0 अतिथि।

कार्यशाला में अपने– अपने विचार व्यक्त करते हुए प्रतिभागी।

प्रो. राजेन्द्र प्रसाद

कार्यशाला के मुख्य अतिथि इलाहाबाद राज्य विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. राजेन्द्र प्रसाद ने कहा कि स्थानीय आवश्यकताओं को देखते हुए शोध किए जाने चाहिए और उसमें स्थानीयता के मद्देनजर देश और समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप निष्कर्ष निकाले जाने चाहिए।

आज शोध में विज्ञान, कला और आध्यात्मिकता का समन्वय आवश्यक है, तभी यह समाज के लिए उपयोगी हो सकता है। प्रो. प्रसाद ने कहा कि हमें शोधार्थी को अधिक से अधिक जिज्ञासु बनाना है और उसे ऐसा ज्ञान देना है जिससे उसकी जिज्ञासा बनी रहे। जिज्ञासु बने रहना शोध के लिए बहुत जरूरी है। यह मनुष्य की जिज्ञासा ही है जिससे सभ्यता का इतना विकास हुआ है।

हमारा प्राचीन ज्ञान बहुत भव्य था, ज्ञान की व्यापकता व विलक्षणता थी लेकिन कालान्तर में उसका ह्रास हुआ, यद्यपि कहीं–कहीं उसकी प्रमुखता बनी रही परन्तु अधिकतर शोध आदि में पाश्चात्य ज्ञान और प्रविधियों का वर्चस्व स्थापित हो गया। उक्त वक्तव्य उ.प्र. राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. कामेश्वर नाथ सिंह ने अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में व्यक्त किए।

प्रो. सिंह विज्ञान विद्याशाखा के तत्वावधान में 19 से 25 मार्च 2018 तक आयोजित 'रिसर्च मेथोडालॉजीः डाटा एनालिसिस विद आक्टेव एण्ड रिपोर्ट राइटिंग बाई लेटेक्स' विषयक साप्ताहिक राष्ट्रीय कार्यशाला–सह–प्रषिक्षण कार्यक्रम के समापन सत्र में अध्ययक्षीय उद्‌बोधन कर रहे थे। प्रो. सिंह ने कहा कि हमें ज्ञान की विविध विधाओं पर शोध के लिए केवल पश्चिम की ओर झांकना ही जरूरी नहीं है, हमें अपनी प्राचीन विरासत में निहित बहुमूल्य ज्ञान पर भी प्रभावी ढंग से शोध कार्य करना चाहिए।

प्रो. सिंह ने कहा कि हमारा शोध उपयोगिता परक होना चाहिए। उपयोगिता वास्तव में आवश्यकता परक होती है। कुलपति प्रो. सिंह ने कहा कि प्रदेश – देश और समाज की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर रचनात्क शोधकार्य किए जाने की आवश्यकता है। प्रो. सिंह ने कहा कि कोई भी शोध अपने में पूर्ण नहीं होता, उसमें भविष्य की संभावनाएं निहित रहती हैं, इसलिए हर शोध में आने वाले शोधकर्ताओं के लिए उस शोध से सम्बन्धित नवीन आयामों का उल्लेख अवश्य किया जाना चाहिए।

धन्यवाद ज्ञापन करते हुए कार्यशाला संयोजक डॉ. जी. के. द्विवेदी

अमर उजाला
इलाहाबाद सोमवार, 26 मार्च 2018

आतंक पर नकेल | आतंकी फंडिंग नेटवर्क का भंडाफोड़, 10 गिरफ्तार | उत्तर प्रदेश

शोध को पाश्चात्य ज्ञान पर निर्भरता जरूरी नहीं

मुक्त विवि की कार्यशाला में बोले वीसी प्रो. कामेश्वर नाथ

इलाहाबाद। हमारा प्राचीन ज्ञान बहुत भव्य था, ज्ञान की व्यापकता एवं विलक्षणता थी, लेकिन कालांतर में उसका ह्रास हुआ। हालांकि कहीं-कहीं इसकी प्रमुखता बनी रही लेकिन अधिकतर शोध में पाश्चात्य ज्ञान और प्रविधियों का वर्चस्व स्थापित हो गया। हमें ज्ञान की विविध विधाओं पर शोध के लिए केवल पश्चिम की ओर से झांकना जरूरी नहीं, बल्कि अपनी प्राचीन विरासत में निहित बहुमूल्य ज्ञान पर भी प्रभावी ढंग से शोध करना चाहिए। यह विचार राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. कामेश्वर नाथ सिंह ने विश्वविद्यालय में आयोजित सात दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला सह प्रशिक्षण के समापन पर व्यक्त किए।

'रिसर्च मेथोडोलॉजीः डाटा एनालिसिस विद ऑक्टेव एंड रिपोर्ट राइटिंग बाई लेटेक्स' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में प्रो. सिंह ने कहा कि हमारा शोध उपयोगिता परक होना चाहिए। उपयोगिता वास्तव में आवश्यकता परक होती है। प्रदेश, देश और समाज को ध्यान में रखकर रचनात्मक शोध कार्य किए जाने की आवश्यकता है। मुख्य अतिथि इलाहाबाद राज्य विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. राजेंद्र प्रसाद ने कहा कि स्थानीय आवश्यकताओं को देखते हुए शोध किए जाने चाहिए और इसमें स्थानीयता के मद्देनजर देश और समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप निष्कर्ष निकाले जाने चाहिए। कार्यशाला का संचालन आयोजन सचिव डॉ. श्रुति एवं धन्यवाद ज्ञापन संयोजक डॉ. जीके द्विवेदी ने किया। ब्यूरो

दैनिक जागरण
इलाहाबाद, सोमवार, 26 मार्च 2018
www.jagran.com

डाटा चोरी पर राहुल गांधी ने पीएम पर साधा निशाना }15 सड़क हादसे में बाल-बाल बचे क्रिकेटर मो. शमी }19

'प्राचीन विरासत में निहित बहुमूल्य ज्ञान पर शोध की ज्यादा जरूरत'

जागरण संवाददाता • इलाहाबाद

कार्यशाला
- राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय में शोध पर कार्यशाला
- शोध का उद्देश्य देश और समाज का हित होना चाहिए

हमारा प्राचीन ज्ञान बहुत भव्य था। ज्ञान की व्यापकता व विलक्षणता थी, लेकिन कालांतर में उसका ह्रास हुआ, यद्यपि कहीं-कहीं उसकी प्रमुखता बनी रही। अधिकतर शोध पर पाश्चात्य ज्ञान और प्रविधियों का वर्चस्व स्थापित हो गया। शोध प्राचीन विरासत में निहित बहुमूल्य ज्ञान पर आधारित होना चाहिए। यह बातें उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. कामेश्वर नाथ सिंह ने व्यक्त की।

वह विज्ञान विद्याशाखा के तत्वावधान में 19 से 25 मार्च तक आयोजित 'रिसर्च मेथोडालॉजी : डाटा एनालिसिस विद आक्टेव एंड रिपोर्ट राइटिंग बाई लेटेक्स' विषयक पर साप्ताहिक राष्ट्रीय कार्यशाला-सह-प्रशिक्षण कार्यक्रम के मापन सत्र में अध्यक्षीय उद्बोधन कर रहे थे। उन्होंने कहा कि हमें ज्ञान की विविध विधाओं पर शोध के लिए केवल पश्चिम की ओर झांकना ही जरूरी नहीं है, हमें अपनी प्राचीन विरासत में निहित बहुमूल्य ज्ञान पर भी प्रभावी ढंग से शोध कार्य करना चाहिए। हमारा शोध उपयोगिता परक होना चाहिए। मुख्य अतिथि इलाहाबाद राज्य विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. राजेंद्र प्रसाद ने कहा कि स्थानीय आवश्यकताओं को देखते हुए शोध किए जाने चाहिए और उसमें स्थानीयता के मद्देनजर देश और समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप निष्कर्ष निकाले जाने चाहिए। आज शोध में विज्ञान, कला और आध्यात्मिकता का समन्वय आवश्यक है, तभी यह समाज के लिए उपयोगी हो सकता है।

शोध के लिए जिज्ञासा जरूरी

प्रो. प्रसाद ने कहा कि हमें शोधार्थी को अधिक से अधिक जिज्ञासु बनाना है और उसे ऐसा ज्ञान देना है जिससे उसकी जिज्ञासा बनी रहे। जिज्ञासु बने रहना शोध के लिए बहुत जरूरी है।

प्रो. प्रसाद ने कहा कि मनुष्य की जिज्ञासा ही है, जिससे सभ्यता का इतना विकास हुआ है। कार्यशाला का संचालन आयोजन सचिव डॉ. ऋतु ने किया। इस अवसर पर डॉ. आशुतोष गुप्ता, डॉ. जीके द्विवेदी ने भी संबोधित किया।

इलाहाबाद, सोमवार, 26 मार्च, 2018
परख सच की
जनसंदेश टाइम्स
इलाहाबाद, वाराणसी, लखनऊ, कानपुर एवं गोरखपुर से प्रकाशित
www.jansandeshtimes

गेंद से छेड़छाड़ मामले में स्मि
और वार्नर का इस्तीफा -
135 की चाय देख चौंक गए चिदंबरम - 15

शोध में विज्ञान, कला व आध्यात्मिकता का समन्वय आवश्यक : प्रो.प्रसाद

प्राचीन विरासत में निहित बहुमूल्य ज्ञान पर हो शोध कार्य : कुलपति

इलाहाबाद। स्थानीय आवश्यकताओं को देखते हुए शोध किए जाने चाहिए और उसमें स्थानीयता के मद्देनजर देश और समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप निष्कर्ष निकाले जाने चाहिए। आज शोध में विज्ञान, कला और आध्यात्मिकता का समन्वय आवश्यक है, तभी यह समाज के लिए उपयोगी हो सकता है।

उक्त विचार मुख्य अतिथि इलाहाबाद राज्य विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.राजेन्द्र प्रसाद ने उ.प्र राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय में आयोजित सात दिवसीय रिसर्च मेथोडालॉजीः डाटा एनालिसिस विद आक्टेव एण्ड रिपोर्ट राइटिंग बाई लेटेक्स विषयक साप्ताहिक राष्ट्रीय कार्यशाला सह प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन अवसर पर रविवार को व्यक्त किया। उन्होंने आगे कहा कि हमें शोधार्थी को अधिक से अधिक जिज्ञासु बनाना है और उसे ऐसा ज्ञान देना है जिससे उसकी जिज्ञासा बनी रहे। जिज्ञासु बने रहना शोध के लिए बहुत जरूरी है। यह मनुष्य की जिज्ञासा ही है जिससे सभ्यता का इतना विकास हुआ है।

साप्ताहिक राष्ट्रीय कार्यशाला सह प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन अवसर पर उपस्थित मुख्य अतिथि व अन्य

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए उ.प्र. राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. कामेश्वर नाथ सिंह ने कहा कि हमारा प्राचीन ज्ञान बहुत भव्य था, ज्ञान की व्यापकता व विलक्षणता थी लेकिन कालान्तर में उसका ह्रास हुआ। यद्यपि कहीं-कहीं उसकी प्रमुखता बनी रही परन्तु अधिकतर शोध आदि में पाश्चात्य ज्ञान और प्रविधियों का वर्चस्व स्थापित हो गया। उन्होंने कहा कि हमें ज्ञान की विविध विधाओं पर शोध के लिए केवल पश्चिम की ओर झांकना ही जरूरी नहीं है, हमें अपनी प्राचीन विरासत में निहित बहुमूल्य ज्ञान पर भी प्रभावी ढंग से शोध कार्य करना चाहिए। प्रो. सिंह ने कहा कि हमारा शोध उपयोगिता परक होना चाहिए। उपयोगिता वास्तव में आवश्यकता परक होती है। देश-प्रदेश और समाज की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर रचनात्मक शोधकार्य किए जाने की आवश्यकता है। कोई भी शोध अपने में पूर्ण नहीं होता, उसमें भविष्य की संभावनाएं निहित रहती हैं। कार्यशाला की रिपोर्ट निदेशक डा. आशुतोष गुप्ता ने प्रस्तुत किया। संचालन आयोजन सचिव डा.श्रुति ने एवं धन्यवाद ज्ञापन कार्यशाला संयोजक डा. जी.के द्विवेदी ने किया। अन्त में प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित किये गये।

मुक्त चिंतन News Letter

॥ सरस्वती नः सुभगा मयस्करत् ॥

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा निर्गत अधिनियम संख्या 10, 1999 द्वारा स्थापित

A Quarterly News Bulletin of U.P. Rajarshi Tandon Open University, Allahabad

हम पहुँचे वहाँ, पहुँचा न कोई जहाँ

27 मार्च 2018

प्रो0 देवकी नन्दन द्विवेदी जी एवं श्री श्रीहरि बोरीकर जी से वार्ता करते हुए माननीय कुलपति प्रो0 कामेश्वर नाथ सिंह जी

''हिन्दी सिनेमा में मूल्यों के बदलते प्रतिरूप'' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

दिनांक 27 मार्च, 2018 को उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय के लोकमान्य तिलक शास्त्रार्थ सभागार में ''हिन्दी सिनेमा में मूल्यों के बदलते प्रतिरूप'' विषय पर द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं फिल्म महोत्सव का आयोजित की गयी। इस राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के संगठन मंत्री श्री श्रीहरि बोरीकर जी रहे। मुख्य वक्ता इलाहाबाद विश्वविद्यालय के दर्शनशास्त्र विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो0 देवकी नन्दन द्विवेदी जी एवं अध्यक्षता विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो0 कामेश्वर नाथ सिंह जी ने की।

प्रारम्भ में सेमिनार का संचालन डॉ0 रामजी मिश्र एवं अतिथियों का स्वागत निदेशक डॉ0 आर0पी0एस0 यादव ने किया। डॉ0 जया मिश्रा ने सरस्वती वंदना प्रस्तुत की। आयोजन सचिव डॉ0 अतुल कुमार मिश्र ने सेमिनार की विषयवस्तु के बारे में विस्तार से जानकारी दी। धन्यवाद ज्ञापन डॉ0 विनोद कुमार गुप्त ने किया। इस अवसर पर फिल्म फेस्टिवल में सेल्फी एवं कथाकार का प्रदर्शन किया गया। अतिथियों ने डॉ0 अतुल कुमार मिश्र की पुस्तक 'भूमण्डलीकरण का सांस्कृतिक दर्शन' का विमोचन किया। अन्य तकनीकी सत्रों में डॉ0 राममूर्ति पाठक, डॉ0 साधना श्रीवास्तव, डॉ0 सतीश चन्द्र जैसल आदि ने विचार व्यक्त किया। सेमिनार का समापन 28 मार्च को होगा।

दीप प्रज्ज्वलित कर सेमिनार का उद्घाटन करते हुए माननीय अतिथि

माननीय अतिथियों का स्वागत करते हुए निदेशक डॉ0 आर0पी0एस0 यादव

सरस्वती वंदना प्रस्तुत करती हुई डॉ0 जया मिश्रा एवं सेमिनार की विषयवस्तु के बारे में विस्तार से जानकारी देते हुए आयोजन सचिव डॉ0 अतुल कुमार मिश्र।

मुख्य अतिथि श्री श्रीहरि बोरीकर जी, मुख्य वक्ता प्रो0 देवकी नन्दन द्विवेदी जी एवं माननीय कुलपति प्रो0 कामेश्वर नाथ सिंह जी को पुष्पगुच्छ प्रदान कर उनका स्वागत करती हुई क्रमशः डॉ0 साधना श्रीवास्तव, डॉ0 स्मिता अग्रवाल एवं सुश्री मारिषा

मुख्य अतिथि श्री श्रीहरि बोरीकर जी तथा मुख्य वक्ता प्रो0 देवकी नन्दन द्विवेदी जी को अंगवस्त्र एवं स्मृति चिन्ह प्रदान कर उनका सम्मान करते हुए माननीय कुलपति प्रो0 कामेश्वर नाथ सिंह जी एवं माननीय कुलपति जी को अंगवस्त्र प्रदान कर उनका सम्मान करते हुए माननीय अतिथिगण।

डॉ0 अतुल कुमार मिश्र की पुस्तक 'भूमण्डलीकरण का सांस्कृतिक दर्शन' का विमोचन करते हुए माननीय अतिथिगण।

सेमिनार का संचालन करते हुए डॉ0 रामजी मिश्र एवं मंचासीन माननीय अतिथि

सभागार में उपस्थित प्रतिभागी, सम्मानित नागरिक एवं विश्वालिय परिवार के सदस्यगण।

प्रो0 देवकी नन्दन द्विवेदी

मुख्य वक्ता इलाहाबाद विश्वविद्यालय के दर्शनशास्त्र विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो0 देवकी नन्दन द्विवेदी ने कहा कि बदलते हुए प्रतिमान और तकनीकी के अनुसार ही फिल्मों में मुख्य बोध और पात्रों के चरित्र चित्रण का प्रकार भी बदलता है। जो मूल्य वांछनीय है उनके साधनों की खोज और उनकी समीक्षा भी आज दर्शन, सौन्दर्यशास्त्र, मूल्य चिंतन तक साहित्य समीक्षा के सुविचार्य विषय हैं। हर मूल्य प्रत्येक परिस्थिति में सही या गलत, सकारात्मक या नकारात्मक नहीं हो सकता। अतः हम कह सकते हैं कि मूल्य देश काल और परिस्थितिगत होते हैं। उन्होंने कहा कि मनोरंजन भी एक मूल्य है। माध्यम भिन्न हो सकते हैं। प्रत्येक मनुष्य अपने मनोरंजन के लिये विधा विशेष का चयन करता है। महत्वपूर्ण बात यह है कि मनोरंजन किस प्रकार के साधन द्वारा किया जा रहा है।

श्रीहरि बोरीकर

फिल्मों मे ंसामाजिक मूल्यों का संरक्षण जरूरी–बोरीकर

राष्ट्रीय संगोष्ठी के मुख्य अतिथि श्रीहरि बोरीकर ने कहा कि समाज को चलाने वाले नीतिगत आधारों को ही जीवन मूल्य कहा जाता है जो धर्म का पर्याय है। समाज का मूल्य चिन्तन अगर आदर्श है तो उसमें बनने वाली फिल्मों में भी आदर्श जीवन–मूल्य अपने आप आ जाएंगे, इसलिए हमें पहले स्वयं अपने घर परिवार में मूल्य चेतना की उत्कृष्टता बनाए रखने का प्रयास करना चाहिए।

श्री बोरीकर उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय के लोकमान्य तिलक शास्त्रार्थ सभागार में ''हिन्दी सिनेमा में मूल्यों के बदलते प्रतिरूप'' विषय पर द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं फिल्म महोत्सव के उद्घाटन अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में विचार व्यक्त कर रहे थे। उन्होंने कहा कि समाज में यदि हम रहते हैं तो सामाजिक बन्धनों और सामाजिक मूल्यों का संरक्षण भी जरूरी है और फिल्मों में इस बात को प्रभावी महत्व दिया जाना चाहिए। ''बाजीराव मस्तानी'' और ''पदमावत'' जैसी फिल्मों में ऐतिहासिक महापुरूषों के जीवन को समाज के समक्ष रखा गया, इससे देश के उन वर्गों में अपनी संस्कृति के प्रति आस्था उत्पन्न होगी जिन तक हमारी विरासत के गरिमामय मूल्य नही पहुंच पा रहे हैं। श्री बोरीकर ने कहा कि ऐतिहासिक फिल्मों को आने देना चाहिए, लेकिन जब तक पीढ़ी दर पीढ़ी आदर्श महापुरूषों के जीवन मूल्यों को सामने नहीं लायेंगे तो हम अपने सांस्कृतिक धरोहर को अच्छे ढंग से संरक्षित नहीं रख सकते। आज के युग के अनुरूप रामायण और महाभारत की कहानी और सीरियलों को पुनः नये रूप में सामने लाने की आवश्यकता है। आज समाज का मानस, उसके मूल्यों का ताना बाना घर में बनायी गयी चुनौती को हमें ग्रहण करना होगा क्योंकि फिल्मा निर्माता भी किसी न किसी परिवार से आते हैं।

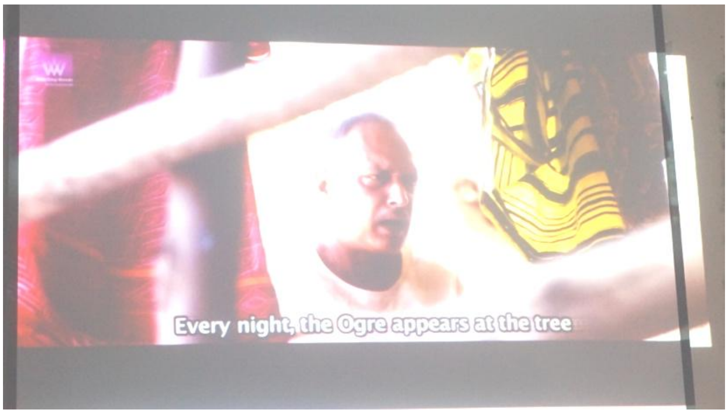

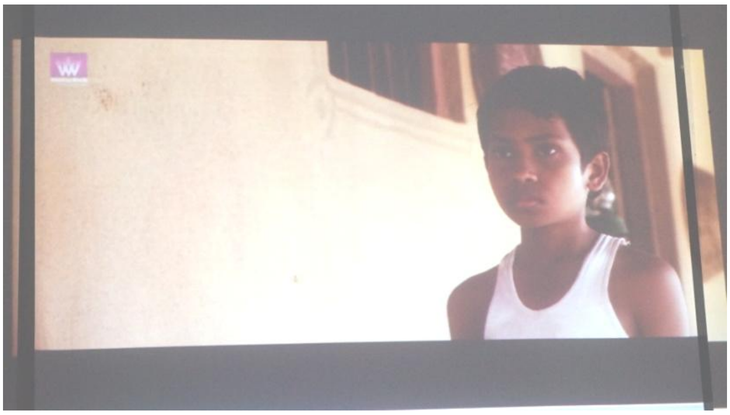

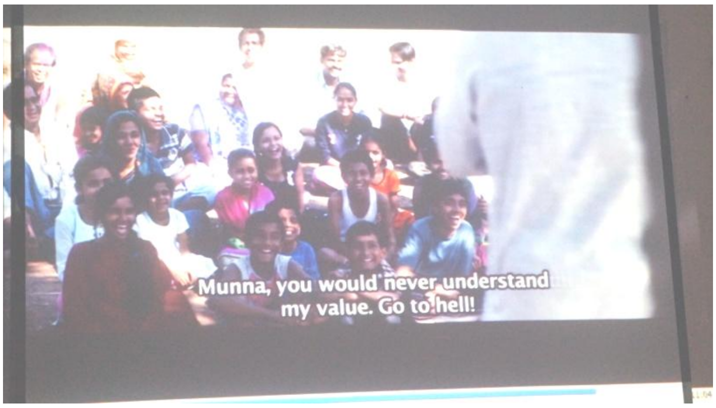

फिल्म फेस्टिवल में सेल्फी एवं कथाकार का प्रदर्शन देखते हुए प्रतिभागीगण।

प्रो0 कामेश्वर नाथ सिंह

मानव मस्तिष्क संसाधनों का सबसे बडा स्रोत– कुलपति

अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो0 कामेश्वर नाथ सिंह ने कहा कि फिल्मों में मूल्य–चिन्तन जैसे विषय को किसी एक अनुशासन की सीमा में नहीं बांधा जा सकता। मूल्य यद्यपि व्यक्तिपरक होते हैं परन्तु समाज के हित के लिए उनकी देशकालगत वस्तुपरकता को पहचाना और निर्धारित किया जा सकता है। प्रो0 सिंह ने कहा कि शिक्षा के दो रूप हैं एक अनौपचारिक शिक्षा तथा दूसरी औपचारिक शिक्षा। औपचारिक शिक्षा संस्थागत शिक्षा है जबकि घर, परिवार, समाज, समुदाय, विभिन्न संस्थाएं तथा सिनेमा अनौपचारिक शिक्षा के सशक्त माध्यम हैं। प्रो0 सिंह ने कहा कि मानव मस्तिष्क संसाधनों का सबसे बडा स्रोत है। प्रकृति में संसाधनों का भण्डार और जैव विविधता होते हुये निर्धनता और अभाव विद्यमान है। इसका प्रमुख कारण जीवन के हर क्षेत्र में ऐसे व्यक्तियों का नितान्त अभाव है जो अपने व्यक्तिगत हितों की उपेक्षा करके समाज हित में कार्य कर सके और उसमें समता स्थापित करने हेतु प्रतिबद्ध हों। प्रो0 सिंह ने कहा कि फिल्म निर्माण के क्षेत्र में भी मूल्यपरक व्यक्तित्व वाले लोगों की आवश्यकता है।

धन्यवाद ज्ञापन करते हुए डॉ0 विनोद कुमार गुप्त

इलाहाबाद, बुधवार, 28 मार्च, 2018

जनसंदेश टाइम्स

परख सच की

इलाहाबाद, वाराणसी, लखनऊ, कानपुर एवं गोरखपुर से प्रकाशित

सुषमा ने फिर से किया वादा - 15

कप्तान बनकर उत्साहित हूं: रहाणे -13

इलाहाबाद

सम्बोधित करते अभाविप के संगठन मंत्री

'हिन्दी सिनेमा में मूल्यों के बदलते प्रतिरूप' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

फिल्मों मे सामाजिक मूल्यों का संरक्षण जरूरी : बोरीकर

मानव मस्तिष्क संसाधनों का सबसे बड़ा स्रोत : कुलपति

इलाहाबाद। समाज को चलाने वाले नीतिगत आधारों को ही जीवन मूल्य कहा जाता है जो धर्म का पर्याय है। समाज का मूल्य चिन्तन अगर आदर्श है तो उसमें बनने वाली फिल्मों में भी आदर्श जीवन-मूल्य अपने आप आ जाएंगे। इसलिए हमें पहले स्वयं अपने घर परिवार में मूल्य चेतना की उत्कृष्टता बनाए रखने का प्रयास करना चाहिए। समाज में यदि हम रहते हैं तो सामाजिक बन्धनों और सामाजिक मूल्यों का संरक्षण भी जरूरी है और फिल्मों में इस बात को प्रभावी महत्व दिया जाना चाहिए।

उक्त विचार अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के संगठन मंत्री श्रीहरि बोरीकर ने उ.प्र राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय के लोकमान्य तिलक शास्त्रार्थ सभागार में हिन्दी सिनेमा में मूल्यों के बदलते प्रतिरूप विषय पर द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं फिल्म महोत्सव के उद्घाटन अवसर पर बतौर मुख्य अतिथि व्यक्त किया। उन्होंने आगे कहा कि ह्यबाजीराव मस्तानी और पदमावत जैसी फिल्मों में ऐतिहासिक महापुरूषों के जीवन को समाज के समक्ष रखा गया, इससे देश के उन वर्गों में अपनी संस्कृति के प्रति आस्था उत्पन्न होगी जिन तक हमारी विरासत के गरिमामय मूल्य नही पहुंच पा रहे हैं। श्री बोरीकर ने कहा कि ऐतिहासिक फिल्मों को आने देना चाहिए, लेकिन जब तक पीढ़ी दर पीढ़ी आदर्श महापुरूषों के जीवन मूल्यों को सामने नहीं लायेंगे तो हम अपने सांस्कृतिक धरोहर को अच्छे ढंग से संरक्षित नहीं रख सकते। आज के युग के अनुरूप रामायण और महाभारत की कहानी और सीरियलों को पुनः नये रूप में सामने लाने की आवश्यकता है। आज समाज का मानस, उसके मूल्यों का ताना बाना घर में बनायी गयी चुनौती को हमें ग्रहण करना होगा क्योंकि फिल्म निर्माता भी किसी न किसी परिवार से आते हैं।

पुस्तक का विमोचन करते अभाविप के संगठन मंत्री व अन्य

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. कामेश्वर नाथ सिंह ने कहा कि फिल्मों में मूल्य-चिन्तन जैसे विषय को किसी एक अनुशासन की सीमा में नहीं बांधा जा सकता। मूल्य यद्यपि व्यक्तिपरक होते हैं, परन्तु समाज के हित के लिए उनकी देशकालगत वस्तुपरकता को पहचाना और निर्धारित किया जा सकता है। कहा कि शिक्षा के दो रूप हैं एक अनौपचारिक शिक्षा तथा दूसरी औपचारिक शिक्षा। औपचारिक शिक्षा संस्थागत शिक्षा है जबकि घर, परिवार, समाज, समुदाय, विभिन्न संस्थाएं तथा सिनेमा अनौपचारिक शिक्षा के सशक्त माध्यम हैं। प्रो. सिंह ने कहा कि मानव मस्तिष्क संसाधनों का सबसे बडा स्रोत है। प्रकृति में संसाधनों का भण्डार और जैव विविधता होते हुए निर्धनता और अभाव विद्यमान है। इसका प्रमुख कारण जीवन के हर क्षेत्र में ऐसे व्यक्तियों का नितान्त अभाव है जो अपने व्यक्तिगत हितों की उपेक्षा करके समाज हित में कार्य कर सके और उसमें समता स्थापित करने हेतु प्रतिबद्ध हों।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय के दर्शनशास्त्र विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. देवकी नन्दन द्विवेदी ने बतौर मुख्य वक्ता कहा कि बदलते हुए प्रतिमान और तकनीकी के अनुसार ही फिल्मों में मुख्य बोध और पात्रों के चरित्र चित्रण का प्रकार भी बदलता है। जो मूल्य वांछनीय है उनके साधनों की खोज और उनकी समीक्षा भी आज दर्शन, सौन्दर्यशास्त्र, मूल्य चिंतन तक साहित्य समीक्षा के सुविचार्य विषय हैं। हर मूल्य प्रत्येक परिस्थिति में सही या गलत, सकारात्मक या नकारात्मक नहीं हो सकता। कहा कि मनोरंजन भी एक मूल्य है, माध्यम भिन्न हो सकते हैं। प्रत्येक मनुष्य अपने मनोरंजन के लिये विधा विशेष का चयन करता है। महत्वपूर्ण यह है कि मनोरंजन किस प्रकार के साधन द्वारा किया जा रहा है। सेमिनार का संचालन डा.रामजी मिश्र एवं अतिथियों का स्वागत निदेशक डा. आरपीएस यादव ने किया। डा. जया मिश्रा ने सरस्वती वंदना प्रस्तुत की। आयोजन सचिव डा.अतुल कुमार मिश्र ने सेमिनार की विषयवस्तु के बारे में विस्तार से जानकारी दी एवं धन्यवाद ज्ञापन डा. विनोद कुमार गुप्त ने किया। इस अवसर पर फिल्म फेस्टिवल में सेल्फी एवं कथाकार का प्रदर्शन किया गया। अतिथियों ने डा.अतुल कुमार मिश्र की पुस्तक भूमण्डलीकरण का सांस्कृतिक दर्शन का विमोचन किया। अन्य तकनीकी सत्रों में डा.राममूर्ति पाठक, डा.साधना श्रीवास्तव, डा.सतीश चन्द्र जैसल आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

इलाहाबाद, बुधवार, 28 मार्च 2018

दैनिक जागरण

www.jagran.com

मुख्य न्यायाधीश के खिलाफ महाभियोग की तैयारी | 03 अमित शाह का सिद्धरमैया सरकार पर हिंदुओं को बांटने का आरोप | 13

यूपीआरटीओयू में आयोजित फिल्म फेस्टिवल व राष्ट्रीय संगोष्ठी में डॉ. अतुल कुमार मिश्र की पुस्तक 'भूमण्डलीकरण का सांस्कृतिक दर्शन' का विमोचन किया गया।

फिल्मों में सामाजिक मूल्यों का संरक्षण जरूरी : बोरीकर

जासं, इलाहाबाद : समाज को चलाने वाले नीतिगत आधारों को ही जीवन मूल्य कहा जाता है जो धर्म का पर्याय है। समाज का मूल्य चिंतन अगर आदर्श है तो उसमें बनने वाली फिल्मों में भी आदर्श जीवन-मूल्य अपने आप आ जाएंगे। यह वक्तव्य अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के संगठन मंत्री श्रीहरि बोरीकर ने व्यक्त किए। वे उप्र राजर्षि टंडन मुक्त विवि के लोकमान्य तिलक शास्त्रार्थ सभागार में 'हिंदी सिनेमा में मूल्यों के बदलते प्रतिरूप' विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी व फिल्म महोत्सव में मुख्य अतिथि के रूप में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि सामाजिक मूल्यों का संरक्षण जरूरी है और फिल्मों में इस बात को प्रभावी महत्व दिया जाना चाहिए। कुलपति प्रो. कामेश्वर नाथ सिंह ने कहा कि फिल्मों में मूल्य-चिंतन जैसे विषय को किसी एक अनुशासन की सीमा में नहीं बांधा जा सकता। इविवि के दर्शनशास्त्र विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. देवकी नंदन द्विवेदी, डॉ. रामजी मिश्र, निदेशक डॉ. आरपीएस यादव, डॉ. जया मिश्रा, डॉ. विनोद कुमार गुप्त, डॉ. राममूर्ति पाठक, डॉ. साधना श्रीवास्तव, डॉ. सतीश चन्द्र जैसल आदि रहे। अतिथियों ने डॉ. अतुल कुमार मिश्र की पुस्तक 'भूमण्डलीकरण का सांस्कृतिक दर्शन' का विमोचन किया।

e-paper : www.dailynewsactivist.com

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

डेली न्यूज़ ऐक्टिविस्ट

शब्द शब्द संघर्ष website : www.dnahindi.com

फिल्मों में सामाजिक मूल्यों का संरक्षण जरूरी: बोरीकर

डेली न्यूज़ नेटवर्क

- मानव मस्तिष्क संसाधनों का सबसे बड़ा स्रोत: कुलपति
- 'हिन्दी सिनेमा में मूल्यों के बदलते प्रतिरूप' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

इलाहाबाद 28-03-2018

http://www.dailynewsactivist.com

डेली न्यूज़ ऐक्टिविस्ट

मुक्त चिंतन News Letter
उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा निर्गत अधिनियम संख्या 10, 1999 द्वारा स्थापित
A Quarterly News Bulletin of U.P. Rajarshi Tandon Open University, Allahabad
हम पहुँचे वहॉ, पहुँचा न कोई जहॉ
28 मार्च 2018

''हिन्दी सिनेमा में मूल्यों के बदलते प्रतिरूप'' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन

उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय के लोकमान्य तिलक शास्त्रार्थ सभागार में ''हिन्दी सिनेमा में मूल्यों के बदलते प्रतिरूप'' विषय पर द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं फिल्म महोत्सव का समापन दिनांक 28 मार्च 2018 को हुआ। समापन सत्र के मुख्य अतिथि इलाहाबाद विश्वविद्यालय के डॉ0 धनन्जय चोपड़ा जी रहे।

इससे पूर्व प्रो0 जटाशंकर, श्री सुनील उमराव, डॉ0 संजय श्रीवास्तव, डॉ0 प्रबुद्ध मिश्र, श्री रितेश प्रसून, डॉ0 आर0पी0एस0 यादव, श्री अंकित पाठक आदि ने विचार व्यक्त किये। संचालन डॉ0 साधना श्रीवास्तव एवं दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी की रिपोर्ट डॉ0 रूचि बाजपेई ने प्रस्तुत की। धन्यवाद ज्ञापन डॉ0 अतुल मिश्र ने किया। दो दिनों तक प्रतिभागियों को शिक्षाप्रद, लघु फिल्में दिखाई गयीं।

समापन सत्र का संचालन करती हुई डॉ0 साधना श्रीवास्तव

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी की रिपोर्ट प्रस्तुत करती हुई डॉ0 रूचि बाजपेई

मुख्य अतिथि डॉ0 धनन्जय चोपड़ा जी को अंगवस्त्र एवं स्मृति चिन्ह प्रदान कर उनका सम्मान करते हुए आयोजन सचिव डॉ0 अतुल कुमार मिश्र।

डॉ0 धनन्जय चोपड़ा

सांस्कृतिक सोच की अभिव्यक्ति हैं फिल्में–चोपड़ा

द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं फिल्म महोत्सव के समापन अवसर पर मुख्य अतिथि डॉ0 धनन्जय चोपड़ा ने कहा कि फिल्में हमें रोना व हंसना सिखाती हैं। फिल्में सांस्कृतिक सोच की अभिव्यक्ति होती है। हिन्दुस्तानी सिनेमा में साहित्य व संस्कृति दोनों ने अपनी जगह बनायी।

उन्होंने कहा कि भारतीय सिनेमा में बहुत से पड़ाव आये। तीन चार दशक पूर्व सिनेमा के मायने होते थे। पूरा का पूरा मोहल्ला इकटठा होकर फिल्म देखने जाया करता था। उस समय की फिल्में समाज को एक नई दिशा देती थी।

e-paper : www.dailynewsactivist.com
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
डेली न्यूज़ ऐक्टिविस्ट
शब्द शब्द संघर्ष
website : www.dnahindi.com

फिल्में सांस्कृतिक सोच की अभिव्यक्तिः चोपड़ा

डेली न्यूज़ नेटवर्क

- 'हिन्दी सिनेमा में मूल्यों के बदलते प्रतिरूप' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

इलाहाबाद। फिल्में हमें रोना व हंसना सिखाती हैं। फिल्में सांस्कृतिक सोच की अभिव्यक्ति होती हैं। हिन्दुस्तानी सिनेमा में साहित्य व संस्कृति दोनों ने अपनी जगह बनायी। यह बातें इलाहाबाद विश्वविद्यालय के डॉ. धनंजय चोपड़ा ने कहीं। डॉ. चोपड़ा उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय के लोकमान्य तिलक शास्त्रार्थ सभागार में 'हिन्दी सिनेमा में मूल्यों के बदलते प्रतिरूप' विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं फिल्म महोत्सव के समापन अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में बोल रहे थे।

उन्होंने कहा कि भारतीय सिनेमा में बहुत से पड़ाव आये। तीन चार दशक पूर्व सिनेमा के मायने होते थे। पूरा का पूरा मोहल्ला इकट्ठा होकर फिल्म देखने जाया करता था। उस समय की फिल्में समाज को एक नई दिशा देती थी। इससे पूर्व प्रो. जटाशंकर, सुनील उमराव, डॉ. संजय श्रीवास्तव, डॉ. प्रबुद्ध मिश्र, रितेश प्रसून, डॉ. आरपीएस यादव, अंकित पाठक आदि ने विचार व्यक्त किये। संचालन डॉ. साधना श्रीवास्तव एवं दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी की रिपोर्ट डॉ. रूचि बाजपेई ने प्रस्तुत की। धन्यवाद ज्ञापन डॉ. अतुल मिश्र ने किया। दो दिनों तक प्रतिभागियों को शिक्षाप्रद, लघु फिल्में दिखाई गयीं।

इलाहाबाद 29-03-2018

http://www.dailynewsactivist.com

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक डेली न्यूज़ ऐक्टिविस्ट
शब्द शब्द संघर्ष

दैनिक जागरण
इलाहाबाद, गुरुवार 29 मार्च 2018
www.jagran.com

एससी-एसटी आरक्षण पर नहीं लागू होती क्रीमी लेयर } 03
विपक्षी एकजुटता की कवायद में सोनिया से मिलीं ममता } 13

आयोजन हिंदुस्तानी सिनेमा में साहित्य व संस्कृति दोनों ने बनाई है अपनी जगह

छात्रों को भाई लघु फिल्म लिटिल टेररिस्ट

यूपीआरटीओयू में आयोजित किया गया दो दिवसीय फिल्म महोत्सव, दो दिनों तक प्रतिभागियों को शिक्षाप्रद, लघु फिल्में दिखाई गई

जासं, इलाहाबाद : अश्विन कुमार द्वारा निर्देशित लघु फिल्म लिटिल टेररिस्ट बुधवार को उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय में चल रहे फिल्म फेस्टिवल के दूसरे दिन प्रदर्शित की गई। लाइव एक्शन शॉर्ट फिल्म कैटेगरी में 2005 में एकेडमिक अवार्ड के लिए नॉमिनेटेड यह फिल्म दर्शकों को खूब भाई। फिल्म फेस्टिवल में कई शॉर्ट फिल्में दिखाई गईं। इसमें प्रमुख रूप से कैमरा, साइलेंट लव, द स्कूल बैग, सुनील उमराव की फिल्म सारा लोहा उनका, बाबूनंदन की केवल धार शामिल रही। शिक्षकों, छात्र-छात्राओं ने सामाजिक विषयों पर आधारित फिल्मों का भरपूर आनंद लिया। दो दिनों तक प्रतिभागियों को शिक्षाप्रद, लघु फिल्में दिखाई गईं।

उत्तर प्रदेश मुक्त विश्वविद्यालय में आयोजित फिल्म महोत्सव व राष्ट्रीय गोष्ठी को संबोधित करते डॉ. धनंजय चोपड़ा।

इससे पूर्व 'हिंदी सिनेमा में मूल्यों के बदलते प्रतिरूप' पर आयोजित दो दिवसीय फिल्म फेस्टिवल व राष्ट्रीय संगोष्ठी को संबोधित करते हुए इलाहाबाद विश्वविद्यालय के सेंटर फॉर मीडिया स्टडीज के कोर्स कोआर्डिनेटर धनंजय चोपड़ा ने कहा कि फिल्में हमें रोना व हंसना सिखाती हैं। फिल्में सांस्कृतिक सोच की अभिव्यक्ति होती हैं। हिंदुस्तानी सिनेमा में साहित्य व संस्कृति दोनों ने अपनी जगह बनाई है। भारतीय सिनेमा में बहुत से पड़ाव आए। तीन चार दशक पूर्व सिनेमा के मायने होते थे। पूरा का पूरा मोहल्ला इकट्ठा होकर फिल्म देखने जाया करता था। उस समय की फिल्में समाज को एक नई दिशा देती थीं।

इससे पूर्व प्रो. जटाशंकर, श्री सुनील उमराव, डॉ. संजय श्रीवास्तव, डॉ. प्रबुद्ध मिश्र, रितेश प्रसून, डॉ. आरपीएस यादव, अंकित पाठक आदि ने विचार व्यक्त किए। संचालन डॉ. साधना श्रीवास्तव एवं दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी की रिपोर्ट डॉ. रुचि बाजपेई ने प्रस्तुत की। धन्यवाद ज्ञापन डॉ. अतुल मिश्र ने किया।

इलाहाबाद, गुरुवार, 29 मार्च, 2018
परख सच की
जनसंदेश टाइम्स

लगेगा विराट का पुतला
विदाई पर मोदी ने ली चुटकी - 15

इलाहाबाद

सिनेमा में सांस्कृतिक सोच की अभिव्यक्ति : चोपड़ा

'हिन्दी सिनेमा में मूल्यों के बदलते प्रतिरूप' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन

संबोधित करते धनन्जय चोपड़ा

इलाहाबाद। फिल्में हमें रोना व हंसना सिखाती हैं एवं इसमें सांस्कृतिक सोच की अभिव्यक्ति भी होती है। हिन्दुस्तानी सिनेमा में साहित्य व संस्कृति दोनों ने अपनी जगह बनायी।

उक्त विचार इलाहाबाद विश्वविद्यालय के डा. धनन्जय चोपड़ा ने उ.प्र राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय के लोकमान्य तिलक शास्त्रार्थ सभागार में ''हिन्दी सिनेमा में मूल्यों के बदलते प्रतिरूप'' विषय पर द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं फिल्म महोत्सव के समापन अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि भारतीय सिनेमा में बहुत से पड़ाव आये। तीन चार दशक पूर्व सिनेमा के मायने होते थे। कहा कि पूरा का पूरा मोहल्ला इकट्ठा होकर फिल्म देखने जाया करता था। उस समय की फिल्में समाज को एक नई दिशा देती थी। इससे पूर्व प्रो. जटाशंकर, सुनील उमराव, डा. संजय श्रीवास्तव, डा. प्रबुद्ध मिश्र, रितेश प्रसून, डा. आरपीएस यादव, अंकित पाठक आदि ने भी सिनेमा को लेकर अपने विचार व्यक्त किये। संचालन डा.साधना श्रीवास्तव एवं राष्ट्रीय संगोष्ठी की रिपोर्ट डा.रूचि बाजपेई ने प्रस्तुत किया। धन्यवाद ज्ञापन डा. अतुल मिश्र ने किया। इस अवसर पर दो दिनों तक प्रतिभागियों को शिक्षाप्रद लघु फिल्में भी दिखाई गयीं।

हिन्दुस्तान
तरक्की को चाहिए नया नजरिया
www.livehindustan.com

सांस्कृतिक सोच की अभिव्यक्ति हैं फिल्में

इलाहाबाद। राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय में 'हिन्दी सिनेमा में मूल्यों के बदलते प्रतिरूप' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन समारोह में इविवि सेंटर ऑफ मीडिया स्टडीज के डॉ. धनंजय चोपड़ा ने कहा कि फिल्में हमें रोना व हंसना सिखाती हैं। फिल्में सांस्कृतिक सोच की अभिव्यक्ति होती हैं।

अमर उजाला
SELECT

सांस्कृतिक सोच की अभिव्यक्ति होती हैं फिल्में

इलाहाबाद। फिल्में हमें रोना और हंसना सिखाती हैं। फिल्में सांस्कृतिक सोच की अभिव्यक्ति होती है। हिंदुस्तानी सिनेमा में साहित्य एवं संस्कृति दोनों ने अपनी जगह बनाई है। ये बातें राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय में 'हिंदी सिनेमा में मूल्यों के बदलते प्रतिरूप' विषय पर आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन पर इविवि के डॉ.धनंजय चोपड़ा ने कहीं।

हिंदी सिनेमा में मूल्यों के बदलते प्रतिरूप विषय पर बोले डॉ.चोपड़ा

उन्होंने कहा कि भारतीय सिनेमा में बहुत से पड़ाव आए। तीन चार दशक पूर्व सिनेमा के मायने होते थे। पूरा का पूरा मोहल्ला एकत्र होकर फिल्म देखने जाया करता था। उस समय की फिल्में समाज को नई दिशा देती थीं। इस मौके पर प्रो.जटाशंकर, सुनील उमराव, डॉ.संजय श्रीवास्तव, डॉ.प्रबुद्ध मिश्र, रितेश प्रसून, डॉ.आरपी यादव, अंकित पाठक ने भी विचार व्यक्त किए। डॉ.रुचि वाजपेई ने संगोष्ठी की रिपोर्ट प्रस्तुत की। संचालन डॉ.साधना श्रीवास्तव एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ.अतुल मिश्र ने किया।

अमर उजाला
amarujala.com
उत्तर प्रदेश

हमें रोना और हंसना सिखाती हैं फिल्में

इलाहाबाद। फिल्में हमें रोना और हंसना सिखाती हैं। फिल्में सांस्कृतिक सोच की अभिव्यक्ति होती है। हिंदुस्तानी सिनेमा में साहित्य एवं संस्कृति दोनों ने अपनी जगह बनाई है। ये बातें राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय में 'हिंदी सिनेमा में मूल्यों के बदलते प्रतिरूप' विषय पर आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन पर इविवि के डॉ.धनंजय चोपड़ा ने कहीं। इस मौके पर प्रो.जटाशंकर, सुनील उमराव, डॉ.संजय श्रीवास्तव, डॉ.प्रबुद्ध मिश्र, रितेश प्रसून, डॉ.आरपी यादव, अंकित पाठक ने भी विचार व्यक्त किए। डॉ.रुचि वाजपेई ने संगोष्ठी की रिपोर्ट प्रस्तुत की। संचालन डॉ.साधना श्रीवास्तव एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ.अतुल मिश्र ने किया।

पायनियर
लखनऊ, बृहस्पतिवार, 29 मार्च, 2018

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी व फिल्म महोत्सव

सांस्कृतिक सोच की अभिव्यक्ति हैं फिल्में: चोपड़ा

- 'हिन्दी सिनेमा में मूल्यों के बदलते प्रतिरूप' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी संपन्न

पायनियर समाचार सेवा। इलाहाबाद

फिल्में हमें रोना व हंसना सिखाती हैं। फिल्में सांस्कृतिक सोच की अभिव्यक्ति होती हैं। हिन्दुस्तानी सिनेमा में साहित्य व संस्कृति दोनों ने अपनी जगह बनायी। उक्त बातें इलाहाबाद विश्वविद्यालय के डा. धनन्जय चोपड़ा ने कहीं। डा. चोपड़ा उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय

राष्ट्रीय संगोष्ठी में बोलते डा. धनन्जय चोपड़ा

के लोकमान्य तिलक शास्त्रार्थ सभागार में 'हिन्दी सिनेमा में मूल्यों के बदलते प्रतिरूप' विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं फिल्म महोत्सव के समापन अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में विचार व्यक्त कर रहे थे। उन्होंने कहा कि भारतीय सिनेमा में बहुत से पड़ाव आये। तीन चार दशक पूर्व सिनेमा के मायने होते थे। पूरा का पूरा मोहल्ला इकट्ठा होकर फिल्म देखने जाया करता था। उस समय की फिल्में समाज को एक नई दिशा देती थीं। दो दिनों तक प्रतिभागियों को शिक्षाप्रद, लघु फिल्में भी दिखाई गयीं। इससे पूर्व प्रो. जटाशंकर, सुनील उमराव, डा. संजय श्रीवास्तव, डा. प्रबुद्ध मिश्र, रितेश प्रसून, डा. आर पी एस यादव, अंकित पाठक आदि ने विचार व्यक्त किये। संचालन डा. साधना श्रीवास्तव एवं दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी की रिपोर्ट डा. रूचि बाजपेई ने प्रस्तुत की। धन्यवाद ज्ञापन डा. अतुल मिश्र ने किया।

DAINIK JAGRAN GORAKHPUR

01-04-2018

यूपीआरटीओयू में जीएसटी, कृषि प्रबंधन सहित पांच नए कोर्स जुलाई से

स्नातक और परास्नातक में शुरू होगी भूगोल की पढ़ाई, जीएसटी, कृषि प्रबंधन और रिमोट सेंसिंग में मिलेगा सर्टिफिकेट

जागरण संवाददाता, गोरखपुर : उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय से अब जीएसटी, कृषि प्रबंधन और रिमोट सेंसिंग के क्षेत्र में विशेषज्ञता हासिल की जा सकती है। यही नहीं दूरस्थ शिक्षा के तहत भूगोल की पढ़ाई भी संभव हो सकेगी। विश्वविद्यालय के जुलाई सत्र से पांच नए पाठ्यक्रमों की शुरुआत हो रही है, साथ ही पृथ्वी विज्ञान की नई फैकल्टी की स्थापना भी की जा रही है। नए पाठ्यक्रमों में जीएसटी, इंटीग्रेटेड एग्रीकल्चर एंड मैनेजमेंट और रिमोट सेंसिंग में सर्टिफिकेट कोर्स शामिल हैं तो नई फैकल्टी स्कूल आफ अर्थ साइंस अंतर्गत बीए और एमए में भूगोल की पढ़ाई शुरू हो रही है। गोरखपुर आए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. केएन सिंह ने बताया कि इन पाठ्यक्रमों की शुरुआत के लिए आवश्यक औपचारिकताएं लगभग पूरी कर ली गई हैं। इनमें जुलाई से दाखिला शुरू होगा। विश्वविद्यालय की योजना अगले वर्षों में इन नई फैकल्टी के अंतर्गत जियो डेसी, जियो फिजिक्स, जियो मेट्रोलॉजी और जियो ओसिएनोग्राफी में भी स्नातक-परास्नातक स्तर पर पाठ्यक्रमों की शुरुआत करने की भी है।

तैयारी

- गोरखपुर आए विश्वविद्यालय के कुलपति ने दी जानकारी
- कहा, इन पाठ्यक्रमों की शुरुआत के लिए औपचारिकताएं कर ली गई है पूरी

युवाओं से बढ़ेगा संवाद

फिलहाल प्रदेश में 10 क्षेत्रीय केंद्रों के माध्यम से दूरस्थ शिक्षा की पढ़ाई मुहैया करा रहे विश्वविद्यालय प्रशासन की योजना दो नए क्षेत्रीय केंद्रों के शुरुआत की भी है। सभी क्षेत्रीय केंद्रों पर सम्मेलन संवाद-समागम के आयोजन के माध्यम से विश्वविद्यालय प्रशासन युवाओं से उनकी रुचि के बारे में जानकारी भी प्राप्त करेगा। जल्द ही पाठ्य सामग्री स्टडी सेंटर से ही वितरित होगी, वर्तमान में प्रचलित डाक से स्टडी मैटेरियल भेजने की व्यवस्था समाप्त की जाने की तैयारी है। कुलपति ने बताया कि पिछले दिनों विश्वविद्यालय में छात्रों की समस्या समाधान के लिए टोल फ्री नंबर 1800111335 जारी किया गया है।

एक विषय से कर सकेंगे स्नातक

नए कुलपति प्रो. केएन सिंह विश्वविद्यालय में दशक भर से बंद एक विषय से स्नातक करने की सुविधा बहाल करने की है। इसके लिए आवश्यक औपचारिकताएं पूरी की जा रही है। इस व्यवस्था के बहाल होने से बड़ी तादात में लोगों को फायदा मिलेगा।

> यूपी राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय की परिकल्पना पं. दीनदयाल के अंत्योदय के सिद्धांत पर आधारित है। वंचित तबके तक उच्च शिक्षा का उजियारा पहुंचे, इसके लिए विश्वविद्यालय प्रशासन प्रयासरत है। हम रोजगारपरक पाठ्यक्रमों की शुरुआत कर रहे हैं साथ ही विश्वविद्यालय का लाभ प्रदेश के हर जरूरतमंद युवा तक पहुंचे, इसके लिए नई नीति तैयार कर रहे हैं।
>
> **प्रो. केएन सिंह,** कुलपति, उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय